आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

सहयोग राशि
30/ ₹

जून 2021

क्रान्ति

मासिक



कोरोना महामारी

के बीच मानवता और सांप्रदायिक सौहार्द के

खिलते फूल

www.kanti.in

संपादक
शिब्ली अरसलान
editorkantimasik@gmail.com

प्रबंधक
रेहान मुबारक शैख़
+91 96993 52114

सहयोग राशि
एक प्रति 25/- रु॰ वार्षिक 270/- रु॰
दो वर्ष 500/- रु॰ पांच वर्ष 1100/- रु॰
आजीवन रु॰ 6000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
+91 8920589292

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली - 110006 से मुद्रित।
फ़ोन: 9818799223
संपादक: शिब्ली अरसलान

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 30 अंक 12 जून 2021

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब



कान्ति
मासिक

इस अंक में

मूल 03
संवाद, संवेदनशीलता और सौहार्द
शिब्ली अरसलान

सौंदर्यबोध 05
दान नहीं, दानी का हृदय देखिए
पीयूष कुमार

दर्शन 06
ईश्वर की अदृश्य सहायता
मुत्तलिब मिर्ज़ा

मुख्य स्तंभ 08
कोरोना महामारी के बीच मानवता और सांप्रदायिक सौहार्द के खिलते फूल
डॉक्टर नफ़ीस अख़्तर

चिंतन 10
पलटो अपने रब की ओर
वारिस हुसैन

युवा तेवर 13
शिक्षा का उद्देश्य
मुहम्मद सईद

ज्वलंत 15
इन्सानी आबादी एक रिसोर्स
मुहम्मद इक़बाल

नारी विमर्श 17
फ़िलिस्तीन की प्रमुख महिला आंदोलनकारी
हुमा मसीह

इतिहास का सच 20
औरंगज़ेब के कुछ फ़रमान
प्रो॰ बी॰एन॰ पाण्डेय

जन-गण-मन 23
सवालों से भागती सरकार
मुहम्मद यूसुफ़ 'मुन्ना'

कविता 25
ग़ाज़ा के निहत्थे ज़िद्दियों के नाम...
अबू अनीका

दुनिया मेरे आगे 26
फ़िलिस्तीन-इज़राईल संघर्ष: युद्धविराम लेकिन अनिश्चितता बरक़रार
जुनैद अली

कविता 32
ग़ाज़ा के एक बच्चे की कविता
कविता कृष्णपल्लवी

व्यक्तित्व विकास 33
ख़ुशमिज़ाजी और सेहत
डॉ॰ शकील अलीग

व्यंग्य 36
ऑक्सीजन जिहाद
बिपिन कुमार शर्मा

लघुकथाएं 38
कोरोना का रोना
सुरेश सौरभ

आख़िरी पन्ना 40
क़ुरआन की विशिष्टता...
मौलाना फ़ारूक़ ख़ां

मूल प्रश्न



संवाद, संवेदनशीलता और सौहार्द



शिब्ली अरसलान

मुद्दा मेवात में भीड़ द्वारा आसिफ़ की निर्मम हत्या का हो या फ़िलिस्तीन पर इज़राईली ज़ुल्म का, भारत में मुद्दों को देखने और प्रतिक्रिया देने का पॉपुलर मानक 'हिंदू-मुस्लिम एंगल' बनता जा रहा है। इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या होगा कि सदियों साथ रह रहे दो बड़े समुदाय के मध्य संवादहीनता अपने चरम पर है। किसी घटना पर एक ही क्षेत्र और क़स्बे में रह रहे दो समुदाय की सोचने की लाइन परस्पर विरोधी होती है।

पिछले दिनों हरियाणा के मेवात क्षेत्र का एक हत्याकांड राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में रहा, और अब भी उसका राजनीतिक दोहन जारी है। मैं चूंकि मेवात ही में रहता हूं, इसलिए मेरे पास दिल्ली और देश के दूसरे हिस्सों से सामाजिक कार्यकर्ताओं, क़रीबी पत्रकार मित्रों और विभिन्न संगठनों से जुड़े लोगों ने राब्ता करके इस जघन्य हत्याकांड की सच्चाई और तफ़सीलात जानना चाही। मैंने अपने क़रीबी मित्रों के साथ मृतक के गांव खेड़ा ख़लीलपुर का दो बार विस्तृत दौरा किया और एक ग्राउंड रिपोर्ट तैयार की। ये ग्राउंड रिपोर्ट उस हंगामे से बिल्कुल अलग है जो घटना के फ़ौरन बाद फेसबुक, ट्विटर और वेबपोर्टल्स पर उठे या फिर उर्दू अख़बारों में अब तक उठ रहे हैं। घटना के फ़ौरन बाद स्वयं मेवात में सोशल मीडियाई शोर ये था कि आसिफ़ की हत्या भी अख़्लाक़, पहलू ख़ान, जुनैद आदि की तरह धार्मिक नफ़रत की बुनियाद पर होने वाली मॉब लिंचिंग है। कुछ अंग्रेज़ी के वेबपोर्टल्स ने 'Lynching by Hindutva mob' की हेडलाइन भी लगा दी थी। हालांकि ये धर्म या समुदाय की बुनियाद पर लिंचिंग की वैसी घटना नहीं है जो अख़्लाक़, पहलू ख़ान और जुनैद के इश्यू में हम देखते हैं। हत्या के मुख्य आरोपी मृतक के गांव के लोग ही हैं, दूसरे गांव के जो हत्यारे इसमें शामिल हैं, उन्हें भी मौक़े पर मौजूद मृतक का पीड़ित भाई नाम बनाम जानता है, यानी सब एक क्षेत्र के लोग हैं, पुरानी रंजिश की बात भी वो कह रहा है। स्पष्ट रहे कि मॉब द्वारा बेरहमी से मारने की घटना एक ही समुदाय के अंदर भी घटित होती रही है, इस मामले में इत्तेफ़ाक़ से हत्यारे और मृतक चूंकि अलग-अलग समुदाय के हैं, इसलिए इसे ये रंग देना आसान है। खेड़ा ख़लीलपुर गांव में हिंदुओं और मुसलमानों की ढेरों बिरादरियां रहती हैं, मेव मुस्लिम और गुज्जरों की आबादी बराबर-बराबर है, इन्हीं दोनों जातियों ही से ग्राम प्रधान (हरियाणा में सरपंच कहते हैं) चुने जाते हैं। अतः मेवों और गुज्जरों

में स्थानीय राजनीतिक कश्मकश रहती है। मरहूम आसिफ़ के ताऊ भी दो कार्यकालों में सरपंच रहे हैं, गांव का मज़बूत परिवार माना जाता है ये। मौजूदा सरपंच एक गुज्जर है। हत्या के सारे मुख्य आरोपी भी उसी गांव के गुज्जर हैं। मेरे पूछने पर आसिफ़ के परिवार के एक ज़िम्मेदार व्यक्ति ने बताया कि मौजूदा सरपंच भले इन्सान हैं और हमारे साथ खड़े हैं।

मैंने ये सवाल कई लोगों से पूछा 'आख़िर ऐसी क्या रंजिश थी कि इतनी बुरी तरह से ज़ालिमों ने आसिफ़ की हत्या की?' सभों का जवाब एक तरह का था, जिसका सार यूं है कि मरहूम आसिफ़ हाल के वर्षों में गांव में अच्छी पहचान बना रहा था, पूर्व सरपंच परिवार से संबंध तो था ही, आर्थिक और शारीरिक तौर पर भी वो मज़बूत था। कई मामलों में उसने हत्यारे परिवार के विरुद्ध सत्य और न्याय का पक्ष लिया था। अभी नज़दीक में एक धोबी (हिंदू) के लड़के को उसने उन ज़ालिमों के चंगुल से बचाया था, तब उन लोगों ने धमकी दी थी कि तेरी चौधराहट जल्दी ख़त्म होगी।

मगर मुस्लिम समुदाय की तरफ़ से ये अतिप्रतिक्रिया लगातार पेश की जा रही है कि हिंदुओं ने एक मुस्लिम युवा की मॉब लिंचिंग कर दी। स्थानीय स्तर पर दोनों ओर के ज़िम्मेदार लोगों ने और न ही यहां की 'सर्वशक्तिमान' खाप पंचायतों ने आपसी संवाद की कोई कोशिश की जिसका बड़ा नुक़सान ये हो रहा कि 'नफ़रती गैंग' ने ख़ौफ़नाक माहौल बनाना शुरू कर दिया है।

संवादहीनता का दूसरा उदाहरण, फ़िलिस्तीन-इज़राईल युद्ध में भारत के बहुत से प्रबुद्ध हिंदू सुधीजन भी ये समझते हैं कि इज़राईल के प्रति मुसलमानों का ग़ुस्सा धार्मिक-साम्प्रदायिक है। इस समझ के बनने में अरब मुसलमानों के साथ-साथ भारतीय मुसलमानों के अतिप्रतिक्रियावादी रवय्यों का भी दख़ल है, असल मुद्दे को समझे बिना कच्ची और अधपकी समझ के साथ होने वाले हंगामों से ये संदेश जाता है कि मुसलमान यहूदी समुदाय ही का धुर विरोधी है, इस्लाम यहूदियों के जीने के हक़ का मुख़ालिफ़ है, मगर ये भी हक़ीक़त है कि भारत के ग़ैर-मुस्लिम बुद्धिजीवियों की बड़ी संख्या संवाद स्थापित करके मामले की जड़ तक पहुंचने के बजाए अपने परसेप्शन पर संतुष्ट रहते हैं।

फ़िलिस्तीन-इज़राईल युद्ध में हम फ़िलिस्तीन के साथ इसलिए खड़े हैं या हमें खड़ा होना चाहिए कि इज़राईल सारे अंतर्राष्ट्रीय रिज़ॉल्यूशन को धता बताकर, ग्रेटर इज़राईल के अपने नापाक विस्तारवादी इरादे के साथ, फ़िलिस्तीनियों को उनके ही घर से बेघर कर रहा है।

भला इस्लाम किसी समुदाय का विरोधी कैसे हो सकता है, ये बड़ी विचित्र बात होगी। होता ये है कि शत्रुता और उन्माद की फ़िज़ा में हम सत्य तक नहीं पहुंच पाते। अच्छे ख़ासे लोग यहूदियों और सहयूनियों (Zionists) में अंतर नहीं कर पाते। जैसे हिंदू और हिंदुत्ववादी में अंतर कम ही लोग समझते हैं। जैसे इस्लाम को मानने वाला कोई सच्चा-पक्का मुसलमान हिन्दू समुदाय का विरोधी नहीं हो सकता, वैसे ही यहूदी समुदाय के विरोध की कोई दलील नहीं हो सकती। यहूदियों से तो मुसलमानों की धार्मिक समानता अधिक है, दोनों अब्राहमिक एकेश्वरवादी समूह हैं। मुसलमान मोसेस अर्थात् मूसा नबी पर ईमान लाए बिना मुसलमान हो ही नहीं सकता, उन्हें क़ुरआन के साथ-साथ तौरात को भी अवतरित पुस्तक (revealed book) मानना है।

हां, हिंदुत्ववादी नफ़रती विचारधारा की तरह सहयूनियत यानी Zionism का विरोध तर्कसंगत है, जो नस्ली वर्चस्व का नज़रिया रखती है। फ़िलिस्तीन-इज़राईल युद्ध में हम फ़िलिस्तीन के साथ इसलिए खड़े हैं या हमें खड़ा होना चाहिए कि इज़राईल सारे अंतर्राष्ट्रीय रिज़ॉल्यूशन को धता बताकर, ग्रेटर इज़राईल के अपने नापाक विस्तारवादी इरादे के साथ, फ़िलिस्तीनियों को उनके ही घर से बेघर कर रहा है। फ़िलिस्तीन और इज़राईल के दरमियान कोई बराबरी की लड़ाई नहीं है, एक निहत्था और कमज़ोर है, जबकि दूसरा अत्याधुनिक घातक हथियारों से लैस है। फ़िलिस्तीनियों की सारी लड़ाई तंग आमद, ब-जंग आमद वाली है यानी इतने तंग किए जा रहे हैं कि आत्म-सम्मान के लिए एक स्वाभिमानी समूह अपने मामूली आतिशबाज़ी समान हथियारों के साथ उठ खड़ा हुआ है।

निष्कर्ष ये है कि संवादहीनता ग़लतफ़हमी बढ़ाती है, फिर इस ग़लतफ़हमी के माहौल से नफ़रती गैंग फ़ायदा उठाता है। केवल गंगा-जमनी तहज़ीब की रट्टामारी काफ़ी नहीं है, निरंतर संवाद ज़रूरी है और जब फ़िज़ा में नफ़रत घुल जाए तो बारंबार संवाद ही इलाज है। संवाद ही से संवेदनशीलता पैदा होगी और संवेदनशीलता से सौहार्द और सद्भावना जन्म लेगा...

सौहार्द और सद्भावना के बिना मानव सभ्यता का सफ़र कामयाबी से हमकिनार नहीं हो सकता। ■■



सौंदर्य बोध

पीयूष कुमार

दान नहीं, दानी का हृदय देखिए

केन्या द्वारा भेजे गए 12 टन अनाज पर सोशल मीडिया में केन्या को "भिखारी, भिखमंगा, ग़रीब" आदि कहा जा रहा है। आपने अमेरिका का नाम सुना होगा, मैनहैटन का भी, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर का भी और ओसामा बिन लादेन का भी। जो ज़्यादातर लोगों ने नहीं सुना होगा वो है, इनोसाईन गांव जो पड़ता है केन्या और तंजानिया के बॉर्डर पर और यहां की लोकल जनजाति है # मसाई । अमेरिका पर हुए 9/11 के हमले की ख़बर मसाई लोगों तक पहुंचने में कई महीने लग गए। ये ख़बर उन तक तब पहुंची जब उनके गांव के पास के ही क़स्बे में रहने वाली, स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी की मेडिकल स्टूडेंट किमेली नाओमा छुट्टियों में वापस केन्या आई और वहां की लोकल जनजाति मसाई को 9/11 का आंखों देखा हाल सुनाया।

कोई बिल्डिंग इतनी ऊंची हो सकती है कि वहां से गिरने पर जान चली जाए, झोपड़ी में रहने वाले मसाई लोगों के लिए ये बात अविश्वसनीय थी मगर फिर भी उन लोगों ने अमेरिकियों के दुःख को महसूस किया और उसी मेडिकल स्टूडेंट के माध्यम से केन्या की राजधानी नैरोबी में अमेरिकी दूतावास के डिप्टी चीफ़ विलियम ब्रांगिक को एक पत्र भिजवाया जिसे पढ़ने के बाद विलियम ब्रांगिक ने पहले हवाई जहाज़ का सफ़र किया, उसके बाद कई मील तक टूटी-फूटी सड़क पर कठिनाई के रास्ते पर चलते हुए मसाई जनजाति के गांव पहुंचे।

स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी की मेडिकल स्टूडेंट किमेली नाओमा छुट्टियों में वापस केन्या आई और वहां की लोकल जनजाति मसाई को 9/11 का आंखों देखा हाल सुनाया।

गांव पहुंचने पर मसाई जनजाति के लोग इकट्ठा हुए और एक क़तार में 14 गाएं लेकर अमेरिकी दूतावास के डिप्टी चीफ़ के पास पहुंचे। मसाईयों के एक बुज़ुर्ग ने गायों से बंधी रस्सी डिप्टी चीफ़ के हाथों पे पकड़ाते हुए एक तख़्ती की तरफ़ इशारा कर दिया। जानते हैं उस तख़्ती पर क्या लिखा था? लिखा था–"इस दुःख की घड़ी में अमेरिका के लोगों की मदद के लिए हम ये गाएं उन्हें दान कर रहे हैं"। जी हां, उस पत्र को पढ़कर दुनिया के सबसे ताक़तवर और समृद्ध देश का राजदूत सैकड़ों मील चलकर चौदह गायों का दान लेने आया था।

गायों के ट्रांसपोर्ट की कठिनाई और क़ानूनी बाध्यता के कारण गाएं तो नहीं जा पाईं मगर उनको बेंचकर एक मसाई आभूषण ख़रीद कर 9/11 मेमोरियल म्यूज़ियम में रखने की पेशकश की गई। जब ये बात अमेरिका के आम नागरिकों तक पहुंची तो पता है क्या हुआ? उन्होंने आभूषण की जगह गाय लेने की ज़िद्द कर दी। ऑनलाइन पिटीशन साइन किए गए की उन्हें आभूषण नहीं गाय ही चाहिए, अधिकारियों को ईमेल लिखे गए, नेताओं से बात की गई और करोड़ों अमेरिकावासियों ने मसाई जनजाति और केन्या के लोगों को इस अभूतपूर्व प्रेम के लिए कृतज्ञ भाव से धन्यवाद दिया, उनका अभिनंदन किया। ■■

दर्शन



मुत्तलिब मिर्ज़ा
कोटा, राजस्थान

ईश्वर की अदृश्य सहायता

हमने ईश्वर को नहीं देखा लेकिन उसके होने के अनगिनत प्रमाण हम अपने चारों तरफ़ देखते हैं। कभी-कभी ऐसी घटनाएं घटित होती हैं जिनसे ईश्वर के होने पर विश्वास और मज़बूत हो जाता है, हाल ही में इज़राईल-फ़िलिस्तीन युद्ध में जिस तरह इज़राईल ने युद्ध विराम की घोषणा की वो ईश्वरीय मदद की हैरान कर देने वाली घटना है। एक तरफ़ ऐसा देश है जिसे दुनिया की महाशक्तियों का सहयोग मिल रहा है, तो दूसरी तरफ़ एक शहर तक सीमित हो जाने वाले निहत्ते फ़िलिस्तीन के वासी हैं जो अपने हाथों में पत्थर-कंकर और मामूली रॉकेट्स के साथ आधुनिक हथियारों से सुसज्जित इज़राईल के सामने दृढ़ता से खड़े हैं। दुनिया में जो तकनीकें जो रिसोर्सेज़ किसी को मैदान-ए-जंग का महारथी बनाती हैं उनमें दोनों की कोई तुलना नहीं, लेकिन फिर भी इज़राईल घुटने टेकने पर मजबूर हुआ। ये मज़लूम फ़िलिस्तीनियों के ईश्वर पर विश्वास और ईश्वर की अदृश्य सहायता की ज़िंदा मिसाल है। यही वजह है कि जब इज़राईल ने युद्ध विराम की घोषणा की तो फ़िलिस्तीनी जनता घरों से निकल कर ईश्वर की आराधना के गीत गाने लगती है,अपने सर झुका कर उसका शुक्र अदा करती है, इस दृश्य की सुंदरता की अनुभूति उसी को हो सकती है जो ईश्वर के होने और मज़लूम के सर पर उसके हाथ के होने का विश्वास अपने दिल में रखता है। इन्सानी इतिहास की ये कोई पहली घटना नहीं है जब इस तरह एक मज़बूत ताक़त अपने से बहुत कमज़ोर नज़र आने वाली ताक़त के आगे बेबस हुई हो।

पवित्र क़ुरआन में इतिहास के पन्नों में दर्ज ऐसी कुछ घटनाओं की तरफ़ ध्यान आकर्षित किया गया है, एक घटना जिसका वर्णन क़ुरआन के दूसरे अध्याय की आयत 247-250 तक किया गया है, जिसमें तालूत नाम के एक बादशाह का सामना अपने से कई गुना बड़ी फ़ौज से होता है, बड़ी फ़ौज को देखकर कुछ लोग घबराते हैं, लेकिन वो लोग जिन्हें ईश्वर से मुलाक़ात का सच्चा विश्वास था पुकारते हैं, "अल्लाह के हुक्म से कई छोटी फ़ौजें बड़ी फ़ौजों पर विजय प्राप्त कर चुकी हैं, ईश्वर दृढ़ता से टिके रहने वालों के साथ होता है।"

(क़ुरआन-2:249)

ईश्वर की सहायता उन्हीं लोगों को मिलती है जो ख़ुद ज़ुल्म व अत्याचार के ख़िलाफ़ खडे होते हैं, संघर्ष करते हैं और दृढता के साथ सत्य पर जमे रहते हैं, मौत का ख़ौफ़ उन्हें भयभीत नहीं करता, पेट की भूक उन्हें बेबस नहीं बनाती, अपना सब कुछ छिन जाने का ख़तरा उनके इरादों में कमज़ोरी पैदा नहीं करता, इन सबके बावजूद वो न्याय के लिए संघर्षरत रहते हैं ।

इसी तरह पैग़म्बर मुहम्मद के ज़माने में मशहूर जंग जिसे "जंगे बद्र" के नाम से जाना जाता है, उसमें पैग़म्बर मुहम्मद के अनुयायियों की संख्या उनके सामने मौजूद लश्कर की एक तिहाई थी लेकिन ईश्वरीय मदद एक बार फिर सच के साथ और ज़ुल्म के ख़िलाफ़ थी, क़ुरआन इस घटना पर यूं टिप्पणी करता है, "याद करो जब वह तुमको राहत देने के लिए सुलाता है, और वह आकाश से पानी भेजता है ताकि वह तुम्हें उससे शुद्ध कर सके और शैतान की तरफ़ से पैदा होने वाली घबराहट को दूर कर दे, ताकि तुम्हारे दिल उससे मज़बूत हो जाएं और तुम्हारे क़दम जम जाएं।"

(क़ुरआन-8:11)

बद्र के मैदान में पैग़म्बर मुहम्मद की फ़ौज के सामने जो भारी-भरकम फ़ौज खड़ी थी उसके हिस्से में ऐतिहासिक और निर्णायक पराजय आई जिसने पूरे अरब के इतिहास और भूगोल को बदल दिया।

ईश्वर की इस अदृश्य सहायता का अपना एक क़ानून है और वो ये कि अगर ईश्वर इस तरह अत्याचारियों के मुक़ाबले में कमज़ोर और अलग-थलग कर दिए लोगों की सहायता न करे तो ज़मीन पर कोई चर्च कोई सिनागोग, कोई मंदिर, कोई मस्जिद ज़ालिमों के ज़ुल्म से न बचे। (क़ुरआन-22:40)

लेकिन ईश्वर की सहायता उन्हीं लोगों को मिलती है जो ख़ुद ज़ुल्म व अत्याचार के ख़िलाफ़ खड़े होते हैं, संघर्ष करते हैं और दृढ़ता के साथ सत्य पर जमे रहते हैं, मौत का ख़ौफ़ उन्हें भयभीत नहीं करता, पेट की भूक उन्हें बेबस नहीं बनाती, अपना सब कुछ छिन जाने का ख़तरा उनके इरादों में कमज़ोरी पैदा नहीं करता, इन सबके बावजूद वो न्याय के लिए संघर्षरत रहते हैं।

ईश्वर पर विश्वास किसी भी व्यक्ति या समाज को अंदर से मज़बूत करता है, समस्याओं से जूझने की शक्ति और उनके समाधान की तरफ़ दौड़ने की क्षमता पैदा करता है, क़ुरआन इस विचार को अपने शब्दों में इस तरह कहता है, "धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं, सत्य-मार्ग असत्य से अलग होकर बिल्कुल स्पष्ट हो गया, तो अब जो कोई निरंकुश शैतान का इन्कार करे और ईश्वर को माने तो उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया, जो टूटने वाला नहीं।"

(क़ुरआन-2:256)

ईश्वर को मानने वाले और उस पर विश्वास रखने वाले लोगों को चाहिए कि वो ऐसी घटनाओं का विवेकपूर्ण अध्ययन करें, वो इस तरह की घटनाओं में सत्य व असत्य को तलाश करें, दोनों तरफ़ के लोगों के आचरण, व्यवहार और नीतियों का अध्ययन करें, और ये सुनिश्चित करें कि उन्हें किस तरफ़ खड़ा होना चाहिए, उनकी भावनाएं किनके साथ हों और किनके साथ वो सहयोग करें। ■■





मुख्य स्तंभ

डॉक्टर नफ़ीस अख़्तर
कानपुर, यूपी

कोरोना महामारी के बीच मानवता और सांप्रदायिक सौहार्द के खिलते फूल

हमारा देश कोरोना महामारी के अलावा एक और बड़े संक्रमण से जूझ रहा है। यह है सांप्रदायिक नफ़रत का संक्रमण। यहां तक कि कोरोना महामारी के बीच इसके लक्षण तब बहुत साफ़ और तीव्र रूप में दिखाई देने लगे थे जब संप्रदाय विशेष को कोरोना के फैलाव का ज़िम्मेदार क़रार दिया गया और फिर इसके सहारे नफ़रत को समाज के बहुत भीतर तक पहुंचाने की कोशिश की गई। राजनेता तथा पत्रकार तक इस नफ़रत के कारोबार में लग गए थे। यूं तो नफ़रत के इस रोग से हमारे देश का समाज पहले ही संक्रमित हो चुका था जिसका एक उदाहरण था देश में सिलसिलेवार होने वाली मोबलिंचिंग। सांप्रदायिक दंगे पहले भी होते थे, लेकिन यह अधिक्तर राजनैतिक अवसरवादिता और सियासी गोलबंदी के लिए होते थे। यह वक़्ती और सीमित होते थे और बहुत जल्द सब कुछ समान होने लग जाता था। मोबलिंचिंग का मतलब है कि नफ़रत अब आम जनमानस में स्थाई रूप से क़ब्ज़ा जमा चुकी है। वह अब स्वतंत्र रूपेण बिना किसी उक्सावे के काम करने लगी है। सोशल मीडिया का भी नफ़रत को स्थाई रूप प्रदान करने में सबसे बड़ा योगदान है।

लेकिन कोरोना महामारी के बीच कुछ ऐसे उदाहरण भी दिखाई दिए जिसने मानवता में आशा को जागृत करने का काम किया है। लोग धर्म जाति से ऊपर उठकर एक-दूसरे की मदद के लिए आगे आए। त्रासदी में मानवता के पनपने की यह मिसालें न तो देश के किसी एक क्षेत्र तक सीमित हैं और न ही किसी एक समुदाय तक। कोरोना की पहली लहर में जब लॉकडाउन के चलते ग़रीबों के लिए दो वक़्त की रोटी की व्यवस्था करना कठिन हो गया और जब बड़े शहरों से मज़दूर अपने गांवों और घरों की ओर पलायन कर रहे थे तो सिख, हिन्दू, मुस्लिम और सभी धर्मों के लोग लंगर लगाने और बिना धर्म देखे ग़रीबों को खाना खिलाने का काम करते हुए जगह-जगह दिखाई पड़ रहे थे। कोविड महामारी की दूसरी लहर के साथ-साथ मानवता और सांप्रदायिक सौहार्द की लहर भी तेज़ होती गई।

लोगों की मदद के लिए विभिन्न धार्मिक संगठनों ने एंबूलेंस, कोविड सेंटर और ऑक्सीजन लंगर तक की व्यवस्था की। गुरुद्वारों, मस्जिदों और अन्य धार्मिक स्थलों में कोविड उपचार केंद्र बनाए गए और धार्मिक संगठन ही नहीं आम जनता से भी लोग व्यक्तिगत तथा सामूहिक तौर पर देशवासियों की मदद के लिए आगे आए और धर्म और जाति की दीवारें छोटी पड़ने लगीं। मुसलमानों

ने हिन्दुओं का अंतिम संस्कार तक किया तो हिंदुओं ने मुसलमानों को अस्पताल पहुंचाया और सिखों ने जगह-जगह ऑक्सीजन के लंगर लगाए। कुछ सुनहरे उदाहरण यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

दिल्ली में ऑक्सीजन की भारी क़िल्लत थी, इस बीच एक ऐसा शख़्स था जो दिल्ली वालों के लिए 'ऑक्सीजन मैन' (Oxygen Man) बनकर सामने आया । नाम है आसिम हुसैन।

आसिम हुसैन दिल्ली के दरियागंज इलाक़े में रहते हैं और 'बी ह्यूमन' नाम से NGO चलाते हैं। क़रीब 150 लोग इनके साथ मिलकर काम कर रहे हैं। आसिम हुसैन ने फ्री ऑक्सीजन बैंक (Oxygen Bank) खोल रखा है। जिनके पास क़रीब 40 ऑक्सीजन सिलेंडर (Oxygen Cylinder) हैं। जो मार्च 2021 से अब तक क़रीब 1000 लोगों को निःशुल्क ऑक्सीजन सिलेंडर दे चुके हैं। इनकी वजह से कई लोगों को नई ज़िन्दगी मिली है। जब से कोरोना (Corona) ने रफ़्तार पकड़ी है तब से आसिम सुकून की नींद नहीं ले पाए। दिन हो या रात फ़ोन पर घण्टी बजती और एक ही आवाज़ आती । क्या हमें ऑक्सीजन सिलेंडर मिल जाएगा? आपकी बहुत मेहरबानी होगी। आसिम कहते हैं मांग इतनी ज़्यादा थी कि हम सब लोगों तक ऑक्सीजन सिलेंडर नहीं भेज पा रहे थे।

इसी तरह मुंबई के मलाड में रहने वाले एक शख़्स शाहनवाज़ शेख़ कोरोना मरीज़ों के लिए एक फ़रिश्ता बनकर सामने आए। ज़रूरतमंदों तक ऑक्सीजन पहुंचाने का काम करने वाले शाहनवाज़ सोशल मीडिया पर 'ऑक्सीजन मैन' के नाम से मशहूर हुए। बता दें कि वे मरीज़ों को एक फ़ोन कॉल



पर ऑक्सीजन पहुंचाने का काम कर रहे हैं जिसके लिए उनकी टीम ने एक हेल्पलाइन नंबर और 'कंट्रोल रूम' भी बनाया है, ताकि समय रहते पीड़ित की जान बचाई जा सके।

दिलचस्प बात यह है कि इस मदद के लिए उन्हें काफ़ी बड़ा त्याग भी करना पड़ा है। रिपोर्ट के मुताबिक़, शाहनवाज़ ने अपनी 22 लाख रुपये की SUV बेच दी है जिससे उन्होंने ज़रूरतमंदों के लिए ऑक्सीजन सिलेंडर ख़रीदे हैं और अब उन तक मदद पहुंचा रहे हैं। बता दें कि वह पिछले साल भी लोगों की मदद करते रहे हैं और जब उनके पास पैसे ख़त्म हो गए तो उन्होंने SUV कार बेचने का फ़ैसला किया। उन्होंने बताया कि पिछले साल की तुलना में हालात इस साल ज़्यादा ख़राब हैं। जहां एक तरफ़ जनवरी में ऑक्सीजन की डिमांड के लिए 50 फ़ोन आते थे, वहीं आज रोज़ाना 500 से 600 फ़ोन आ रहे हैं जिसमें से वे केवल 10 से 20 फ़ीसदी लोगों तक ही मदद पहुंचा पा रहे हैं। वह लोगों के घरों तक ऑक्सीजन सिलेंडर पहुंचाते हैं और पिछले साल से अब तक क़रीब 4,000 ज़रूरतमंदों की मदद कर चुके हैं।

वडोदरा में कोरोना महामारी के प्रकोप के बाद से मुस्लिम स्वयंसेवक ऐसे मामलों में कोविड-19 के मृतकों के अंतिम संस्कार करने में सबसे आगे रहे हैं, जहां मृतक के परिजनों ने साथ आने से इन्कार कर दिया हो। अभी हाल ही में जब भाजपा के कुछ नेताओं ने शम्शान में मुस्लिम युवकों की मौजूदगी पर आपत्ति जताई तो वहां की भाजपा महापौर और अन्य स्थानीय बीजेपी नेताओं ने यह कहकर आपत्ति का विरोध किया कि इन मुस्लिम युवकों ने उस समय लगातार अंतिम संस्कार में सहायता की है जब अपने भी आगे नहीं आ रहे थे।

मुंबई के सिंह सभा गुरुद्वारा कोरोना मरीज़ों और ज़रूरतमंदों को खाना, राशन के साथ-साथ ऑक्सीजन भी मुहैया करा रहा है। सिंह सभा द्वारा खाने के लंगर के साथ-साथ ऑक्सीजन लंगर की शुरुआत की गई है।

यह कुछ उदाहरण हैं। वास्तविक्ता यह है कि इस आपदा में पूरे देश में सांप्रदायिक सौहार्द और मानवता की अनेकों मिसालें देखने को मिली हैं। त्रासदी में संवेदनाएं जागृत हुईं तो प्राकृतिक मानव स्वभाव कृत्रिम नफ़रत पर भारी पड़ने लगा।

यह उदाहरण बताते हैं कि हमें निराश होने की ज़रूरत नहीं है। नफ़रत के गहरे बादलों के छांटने के लिए केवल मानव में सोई हुई संवेदनाओं को जगाने की ज़रूरत है। और संवेदनाओं को जगाने के लिए केवल यह एहसास दिलाना है कि हम सब एक ही जैसे एहसास रखते हैं। ■■

चिंतन



वारिस हुसैन

पलटो अपने रब की ओर

कोरोना एक भयानक आपदा है

हमारे देश भारत में कोरोना के प्रकोप ने अत्यंत भीषण रूप धारण कर लिया है और बहुत ज़्यादा लोग इससे पीड़ित हुए हैं। एक बहुत बड़ी संख्या है जो हमसे बिछड़ भी गई। इसका प्रकोप अभी समाप्त भी नहीं हुआ था कि 'फंगस' के विभिन्न रूप में एक भीषण नई महामारी प्रकट हो गई है। आगे अन्य नई आपदाएं भी प्रकट हो सकती हैं। कोरोना का इलाज ढूंढने में हमें कुछ सफलता मिली, पर बहुत संभव है कि भविष्य की किसी नई आपदा में हमें इलाज ढूंढने का समय ही न मिल पाए और हम सब उसका शिकार हो जाएं।

यह ईश्वर का नहीं, हमारा इम्तिहान है

कोरोना आपदा जितनी तीव्रता से फैली है, उतनी ही तीव्रता से कुछ प्रश्न भी देश के वातावरण में फैल गए हैं। ईश्वर हमें कष्ट में क्यों डाल रहा है? क्या वह अपने बन्दों से प्रेम नहीं करता? उसका कोई अस्तित्व है भी या नहीं?

उसके अस्तित्व, दया और प्रेम की निशानी तो चारों ओर फैली है। इनको पहचानने के लिए देखने वाली आंखें और समझने वाले दिल चाहिए। स्वयं हमारा जीवन उसके अस्तित्व की गवाही देता है। हमारी एक-एक सांस उसकी दया का प्रतीक है। इस विशाल संसार का कण-कण उसके प्रेम और उसकी अपार शक्ति की गवाही दे रहा है।

कोरोना और इस जैसी अन्य आपदाएं और संकट तो हम इन्सानों के लिए डरावे का एक माध्यम होते हैं। इनका उद्देश्य हमें नींद से जगाना और ग़फ़लत से निकालकर ईश्वर के अस्तित्व और उसकी प्रभुसत्ता का स्मरण कराना होता है। क्या यह सत्य नहीं है हमारा पूरा समाज अपने सृष्टिकर्ता और पालनहार की उपेक्षा में जीवन व्यतीत कर रहा है?

क्या है यह जीवन? मृत्यु क्या है? इसके बाद क्या होगा?

हमारा जीवन एक इम्तिहान है और यह स्वयं ईश्वर के अस्तित्व और उसकी प्रभुसत्ता की पहचान है। उसी की क्षत्र-छाया में हमारा जीवन व्यतीत हो रहा है और हम सब अपने अंतिम पड़ाव की ओर अग्रसर हैं।

"बड़ा बरकत वाला है वह जिसके हाथ में सारी बादशाही है और वह हर

चीज़ की सामर्थ्य रखता है। जिसने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।"

(क़ुरआन 67:1-2)

मृत्यु इस जीवन का अंत नहीं, इसमें लिए जा रहे इम्तिहान का अंत है। भयानक भूल होगी मृत्यु को जीवन का अंत समझ बैठना। इम्तिहान का परिणाम भी निकलना है और उसका प्रतिफल भी मिलना है। यह मृत्यु-पश्चात जीवन में ही संभव हो सकता है।

संसार की वास्तविकता को भुलाकर, उसकी रंगरलियों का शिकार हो जाने वालों को झंझोड़कर जगाने और वास्तविकता का बोध कराने का प्रावधान ईश्वर ने भली-भांति कर रखा है। कोरोना या इस जैसी अन्य आपदाएं जैसे भूकंप, आंधी, बाढ़, सूखा आदि उसके इसी प्रावधान का अंग हैं। बुद्धिमानी इसी में है कि इनको इसी रूप में लिया जाए और जीवन में हो गए भटकाव से निकलकर जीवन-रूपी गाड़ी को फिर सही दिशा में डालने का प्रयत्न किया जाए। यही इन आपदाओं का सन्देश है।

मृत्यु प्राकृतिक है और अपने निर्धारित समय पर सबको आनी है। पर जब मृत्यु विकराल रूप धारण कर ले, और हर तरफ़ मौत का तांडव छा जाए, तो इसे प्राकृतिक नहीं कहा जा सकता। इसमें छिपे सन्देश को पढ़ा जाना चाहिए। इसकी ओर से आंख और कान बंद कर लेना, जीवन की सच्चाई की उपेक्षा करते हुए अपने भटकाव पर जमे रहने की मूर्खतापूर्ण घोषणा है। यह ईश्वर को चैलेंज करने के समान है।

याद रखिए, यह संसार हमारा नहीं, ईश्वर का है

इस संसार में हम स्वयं अपनी इच्छा से नहीं आए हैं, हमें यहां पैदा किया गया है। यहां उपलब्ध संसाधन हमने नहीं बनाए हैं, इनकी रचना ईश्वर ने की है। मृत्यु पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है, न हम इस पर अंकुश लगाने की क्षमता रखते हैं। ईश्वर जब चाहता है हमारे प्राणों को हर लेता है और हम एकदम असहाय होते हैं। यह सब इस बात का खुला प्रमाण है कि हम उसी एक सर्वशक्तिमान ईश्वर की प्रभुसत्ता में जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

"अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रोज़ी दी; फिर वह तुम्हें मृत्यु देता है; फिर तुम्हें जीवित करेगा। क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में भी कोई है, जो इन कामों में से कुछ कर सके? महान और उच्च है वह उससे जो साझी वे ठहराते हैं।" (क़ुरआन 30:40)

जन्म, मृत्यु और हमको मिलने वाली रोज़ी, सब ईश्वर के कंट्रोल में है, और हम उसके इस निर्णय के समक्ष सदा नतमस्तक रहते हैं। तो इस आयत में बताई उसकी चौथी सच्चाई, मृत्यु पश्चात जीवन, को भी हम क्यों स्वीकार नहीं कर लेते?

"तुम अल्लाह के साथ अविश्वास की नीति कैसे अपनाते हो, जबकि तुम निर्जीव थे तो उसने तुम्हें जीवित किया, फिर वही तुम्हें मौत देता है, फिर वही तुम्हें जीवित करेगा, फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है?" (क़ुरआन 2:28)

कब तक हम मृत्योपरांत जीवन के अस्तित्व का इन्कार करते रहेंगे?

स्वास्थ्य, बीमारी और इलाज : ईश्वर की निशानियां हैं

हमारा स्वास्थ्य ईश्वर की एक महान अनुकम्पा है। बीमारी उसकी इस महान अनुकम्पा से वंचित हो जाने का नाम है। बीमारी यह बोध कराती है कि उसकी अनुकम्पाओं से उदासीन रहना बुद्धिमानी नहीं, उसके प्रति सदा आभारी होने की आवश्यकता है।

ईश्वर ने हर बीमारी के साथ उसका इलाज भी बनाया है, पर इसकी खोज के लिए उसी की प्रदान की हुई बुद्धि और विवेक के उपयोग की आवश्यकता पड़ती है। इलाज खोज लेना भी उसकी इच्छा और अनुमति से ही होता है और इसमें गर्व और अहंकार का कोई स्थान नहीं है। यह भी उसकी महान अनुकम्पा का एक रूप है और इस पर भी उसका गुणगान होना चाहिए।

ईश्वर और उसकी अनुकम्पाओं की निशानी जहां इन्सान के शरीर और उसके स्वास्थ्य में है, वहीं पृथ्वी और आकाश में भी चारों ओर उसकी निशानियां फैली हुई हैं।

"और धरती में विश्वास करने वालों के लिए बहुत-सी निशानियां हैं, और, स्वयं तुम्हारे अपने आप में भी। तो क्या तुम देखते नहीं? और आकाश में ही तुम्हारी रोज़ी है और वह चीज़ भी जिसका तुम से वादा किया जा रहा है।"

(क़ुरआन 51:20)

अपने अत्यंत कृपाशील और दयावान ईश्वर को पहचानने के लिए निशानियों की कमी नहीं है। हमने ही आंखें बंद कर रखी हैं।

कष्ट में उसे याद करते हैं, फिर भुला देते हैं

कष्ट और संकट के समय ईश्वर को याद करना और उसके उपरान्त उसको भुला बैठना, इन्सान सदा से इसी पथभ्रष्टता का शिकार रहा है और आज भी है।

"मनुष्य को जब कोई तकलीफ़ पहुंचती है, वह लेटे या बैठे या खड़े हमको पुकारने लग जाता है। किन्तु जब हम उसकी तकलीफ़ उससे दूर कर देते हैं तो वह इस तरह चल देता है मानो कभी

कोई तकलीफ़ पहुंचने पर उसने हमें पुकारा ही न था। इसी प्रकार मर्यादाहीन लोगों के लिए जो कुछ वे कर रहे हैं सुहावना बना दिया गया है।''

(क़ुरआन 10:12)

कोरोना की यह भयानक आपदा एक अवसर है उसकी ओर पलटने का, उसके प्रकोप से क्षमायाचना करने का। यह निश्चिन्त बैठने का समय नहीं है।

''फिर क्या वे लोग जो ऐसी बुरी-बुरी चालें चल रहे हैं, इस बात से निश्चिन्त हो गए हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में धंसा दे या ऐसे मौक़े से उनपर यातना आ जाए जिसका उन्हें एहसास तक न हो?'' (क़ुरआन 16:45)

सोचने की बात

पूरे विश्व में छाई हुई आपदा, एक के पीछे एक आने वाले अन्य संकट, भूकम्प में हज़ारों की मृत्यु, हर तरफ़ समाज में फैला भ्रष्टाचार, ज़ुल्म और अन्याय। यह सब प्रेरित करते हैं कि हम घोर मंत्रणा करें कि कहीं यह सब हमारे कर्मों का दुष्परिणाम तो नहीं?

''थल और जल में बिगाड़ फैल गया स्वयं लोगों ही के हाथों की कमाई के कारण, ताकि वह उन्हें उनकी कुछ करतूतों का मज़ा चखाए, कदाचित वे बाज़ आ जाएं।'' (क़ुरआन 30:41)

इतिहास साक्षी है कि जब भी संसार में अत्याचार और भ्रष्टाचार की अति हुई है और इन्सान ने नैतिकता की सारी सीमाओं को तोड़ता है, ईश्वर की ओर से प्रकोप का भागी बना है।

''कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने विनष्ट कर दिया इस दशा में कि वे ज़ालिम थीं, तो वे अपनी छतों के बल गिरी पड़ी हैं। और कितने ही परित्यक्त (उजाड़) कुएं पड़े हैं और कितने ही पक्के महल भी!'' (क़ुरआन 22:45)

''तेरे रब की पकड़ ऐसी ही होती



है, जब वह किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है। निस्संदेह उसकी पकड़ बड़ी दुखद, अत्यन्त कठोर होती है।''

(क़ुरआन 11:102)

यह बात समझना कोई मुश्किल नहीं है कि इस संसार में जितनी भी आपदा आए, जितना भी कष्ट हो और कितने भी दुख हों, सब एक सीमित समय के लिए होते हैं और समय के साथ धूमिल पड़ जाते हैं या समाप्त हो जाते हैं। जीवन के समस्त कर्मों का हिसाब इस संसार में संभव नहीं है। इसका प्रावधान ईश्वर ने मृत्यु पश्चात जीवन, अर्थात् आख़िरत में रखा है जहां इन्सान के एक-एक कर्म का हिसाब होगा।

क्या करें?

कोरोना के इस संकट के समय में भी कुछ लोग हैं जो इस आपदा को अपनी जेब भरने का अवसर समझ रहे हैं। दवाएं, इंजेक्शन, ऑक्सीजन वह अन्य वस्तुओं के दाम इतने अधिक बढ़ गए हैं कि एक आम नागरिक की क्षमता से परे हो गए हैं। लोग मर रहे हैं तो मरे, उनको इन्सानों को लूटने में कोई संकोच नहीं है। क़ानून व्यवस्था इनको रोकने में असक्षम हो गई है। तो क्या ऐसे लोगों को सुधारने का कोई उपाय नहीं है?

इस्लाम के पास इसका उपाय है। उसका मानना है कि इन्सानों को नैतिकता के शिखर पर ले जाने और समस्त बुराइयों से बचाने के लिए तीन मौलिक धारणाओं को स्वीकार करना आवश्यक है।

(1) तौहीद : सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान ईश्वर अल्लाह पर आस्था, जो सबके कर्मों से भली-भांति और सबको दण्डित करने की शक्ति रखता है।

(2) रिसालत (ईश्दूतत्व): पैग़म्बरों पर आस्था, जो इन्सानों को सीधा और सच्चा मार्ग पहुंचाने और चलकर दिखाने के लिए भेजे गए थे और जिनको ग्रन्थ भी प्रदान किए थे।

(3) आख़िरत : इस बात पर आस्था कि यह जीवन एक इम्तिहान है और इसका परिणाम मृत्योपरांत जीवन में निकलेगा। सफल होने वालों को स्वर्ग की प्राप्ति होगी और असफल होने वालों को नरक की आग की यातना झेलनी होगी।

इस्लाम इन्सानों का बनाया हुआ नहीं, बल्कि अल्लाह ईश्वर की ओर से अवतरित जीवन व्यवस्था है जो इन्सानों को सफलता की ओर ले जाती है। इन ईश्वरीय प्रावधान में ही सबका कल्याण छिपा है और अंतिम ईशग्रंथ क़ुरआन में यह पूर्ण रूप से सुरक्षित है। क़ुरआन सबके लिए है और सबको इसका अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

''वास्तव में यह क़ुरआन वह मार्ग दिखाता है जो सबसे सीधा है। और जो लोग इसे स्वीकार कर अच्छे कर्म करने लगें, उन्हें यह शुभ सूचना देता है कि उनके लिए बड़ा बदला है।''

(क़ुरआन 17:9)

युवा तेवर



मुहम्मद सईद

शिक्षा का उद्देश्य

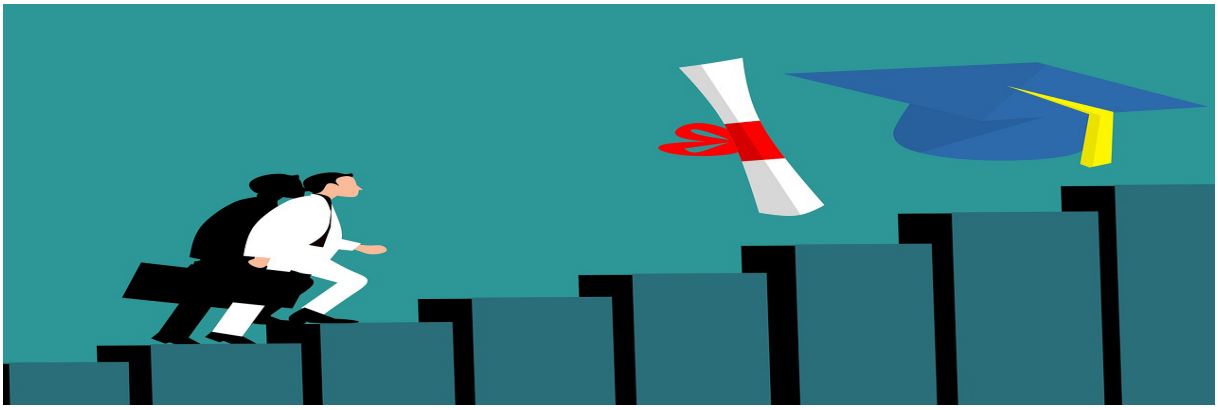
शिक्षा वर्तमान समय में विकास का मापक बन गई है। आज नवयुवक के लिए सबसे चिंता का विषय उसकी शिक्षा है। समाचार पत्रों में नए-नए कोर्सेज की बाढ़ है। अर्थ की सड़क पर लाभ की अंधी दौड़ ने शिक्षा को भी व्यापार बनाकर रख दिया है।

पर इन सब चिंताओं में एक बड़ा प्रश्न कहीं खो गया है वह है शिक्षा का उद्देश्य। किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसके उद्देश्य की सही समझ न हो अथवा ग़लत उद्देश्य बना लिया जाए तो वह काम पूरी तरह व्यर्थ हो जाता है। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि वर्तमान शिक्षित समाज भी अपेक्षाओं के अनुसार नहीं है। न ही वह वैसा सभ्य है जैसा उसे होना चाहिए और न ही शांतिपूर्ण। और न ही शिक्षा छात्रों के लिए जीवन की समस्याओं को हल करने में पूरा योगदान दे पा रही है।

रास्ते से अनभिज्ञ, अंधकार में भटकते किसी व्यक्ति की जो स्थिति होती है वही स्थिति आज के छात्र की है। यदि किसी को ज्ञात न हो कि उसे कहां जाना, परंतु वह चल रहा हो तो न ही उसे चलने में बहुत अधिक दिलचस्पी होगी और न ही रास्ते की समस्याओं को सुलझाने में वह अधिक रुचि लेगा। इसी प्रकार आज के छात्र की दिलचस्पी भी शिक्षा से कम होती जा रही है तथा शिक्षा का नवऔपनिवेशीकरण, शिक्षा का निजीकरण, प्राइमरी शिक्षा की बुरी स्थिति, अपर्याप्त शिक्षक, अनुपयुक्त पाठ्यक्रम जैसी जो समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं उनके प्रति भी वह मौन है।

यदि आज का छात्र शिक्षा के सही उद्देश्य को जानता हो, तो न सिर्फ़ यह कि वह समाज के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा, बल्कि शिक्षा के संबंध में उठ रही समस्याओं को स्वयं ही हल करने का प्रयत्न करेगा। शिक्षा के उद्देश्य को न जानने के अलावा एक-दूसरी समस्या शिक्षा के उद्देश्य का ग़लत निर्धारण भी है। उदाहरण के लिए कुछ छात्र जीविकोपार्जन को शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं। वह पूर्णतः ग़लत नहीं, बल्कि उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य को बहुत सीमित कर दिया है। क्योंकि जीवन धनार्जन के अलावा भी बहुत कुछ है।

इसी प्रकार कुछ विद्वानों का विचार यह है कि शिक्षा ज्ञान प्राप्त करने के लिए है, परंतु यहां भी ज्ञान क्यों और कैसे यह बात शेष रह जाती है। कुछ विद्वानों का मत यह है कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संस्कृति के स्थानांतरण का माध्यम शिक्षा ही है। कुछ विद्वान शिक्षा का उद्देश्य प्रतिभा विकास बताते हैं। वास्तव में शिक्षा बहुत सारे उद्देश्यों को पूरी करती है। उसका एक उद्देश्य



मनुष्य व उसकी प्रतिभाओं के विकास की दर को बढ़ाना है। मनुष्य अपने जन्म से ही विकसित होना शुरू हो जाता है। उसकी प्रतिभाएं समाज में स्वतः विकसित होती हैं परन्तु शिक्षा का कार्य यह है कि वह इस विकास को प्रबंधित करे व विकास की दर को बढ़ाएं।

उदाहरण के लिए आप समाज में भोजन करना स्वयं ही सीख जाएंगे, परन्तु माता-पिता इस ज्ञान को प्रबंधित ढंग से कम समय में ही दे देते हैं। इस प्रकार शिक्षा छात्र का प्रबंधित सर्वांगीण विकास करती है तथा छात्र की प्रतिभाओं को निखारती है।

शिक्षा का एक दूसरा कार्य सीखना है और कैसे सीखें यह सिखाना है। वास्तव में इस संसार में उपयोगी बातों की कमी नहीं है, परन्तु उन्हें कैसे सीखें यह सिखाना शिक्षा का कार्य है। शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य छात्र को एक अच्छा नागरिक बनाना भी है। शिक्षा छात्र को जैसा कि पहले कहा गया, पूर्व पीढ़ी की संस्कृति का ज्ञान कराती है। कब, किस तरह का व्यवहार किया जाए, किस तरह समाज की मर्यादाओं को सम्मान किया जाए, किस तरह दूसरों से बात की जाए यह शिक्षा ही हमें सिखाती है।

वर्तमान समय में हम देखते हैं कि शिक्षित व्यक्ति भी आपस में लड़ पड़ते हैं, ऐसा शिक्षा के उद्देश्य की अनभिज्ञता व उसके लिए प्रयास न करने के कारण है। मैं यह नहीं कहता कि शिक्षा का अर्थ नैतिक शिक्षा बनकर रह जाए, मगर जो शिक्षा दूसरों से बात करना व उनका सम्मान करना न सीखा सके उससे क्या लाभ। भारत के 57 करोड़ शिक्षित व्यक्तियों द्वारा चयनित सरकारें भ्रष्ट क्यों सिद्ध होती है? शिक्षित व्यक्ति उच्च पद पर पहुंचकर रिश्वत क्यों लेने लगता है?

इससे शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य स्पष्ट होता है जो कि यह है कि शिक्षा ऐसी हो जो मनुष्य को जीवन का सही पथ दिखलाए। उसके जीवन की दिशा सही रखे व उसको उसमें तेज़ चलने के लिए उत्प्रेरित करे।

अभी तक जिन उद्देश्यों की चर्चा की गई है वह इस उद्देश्य के बिना व्यर्थ है। यदि कोई सही दिशा में न हो और शिक्षा उसकी प्रतिभाओं को विकसित करे तो उससे क्या लाभ। तेज़ चलने का लाभ तब ही है, जब आप सही पथ पर हों। मगर जीवन की सही दिशा क्या है यह एक दार्शनिक प्रश्न है। डॉ॰ सम्पूर्णानन्द अपने प्रसिद्ध लेख 'शिक्षा का उद्देश्य' में गीता के दर्शन को जीवन की दिशा व फलतः शिक्षा के उद्देश्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रकार विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं। क़ुरआन 'सिरातुल मुस्तक़ीम' (सीधा मार्ग) को इस जीवन के पथ के रूप में प्रस्तुत करता है।

इस लेख का उद्देश्य इन सारे विचारों का विश्लेषण करना नहीं, बल्कि शिक्षा के परम् उद्देश्य के संबंध में इनका ज़िक्र करना है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जीवन के उद्देश्य संबंधी विचारों को समझने में सहायता करे, अंधविश्वास से बचाए व विभिन्न आस्थाओं व विचारों का विश्लेषण करने का मार्ग खोले तथा उनके मध्य व्यक्तिगत चयन को सरल बनाए। इस प्रकार जीवन के सही पथ पर रखने के अलावा उसकी खोज करना भी शिक्षा का उद्देश्य हो जाता है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को समाजोपयोगी बनाना भी है। शिक्षा ऐसी भी होनी चाहिए कि जिसे पाकर छात्र एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें। दार्शनिक रसेल के शब्दों में, ''हम भौतिकी, जीव-विज्ञान व मनोविज्ञान के बिना समाज का नवनिर्माण नहीं कर सकते।''

केवल ज्ञान भी शिक्षा का एक उद्देश्य है। हमें बेहतर ढंग से जीने के लिए, संसार की वस्तुओं का सही प्रयोग करने के लिए संसार के बारे में पहले से ही जानकारी जमा करना भी आवश्यक है। परन्तु आज की शिक्षा इन उद्देश्यों को किस सीमा तक पूरा कर रही है? या क्या आज के छात्र इन्हीं वांछित उद्देश्यों के लिए शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं इन सारे प्रश्नों पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। ■■

ज्वलंत



मुहम्मद
इक़बाल

इन्सानी आबादी एक रिसोर्स

ताज़ा ख़बर आ रही है कि चाइना में टू चाइल्ड पालिसी ख़त्म हो गई है, सरकार ने तीसरा बच्चा पैदा करने की अनुमति दे दी है। किसी देश की आबादी ज़्यादा होने का एक बड़ा फ़ायदा ये होता है कि उस देश की इकोनोमी बढ़ती है। जब आबादी बढ़ती है तो वस्तुओं की डिमांड बढ़ती है, डिमांड बढ़ती है तो उत्पादन बढ़ता है और जीडीपी बढ़ती है।

आबादी के बल पर बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने का सबसे अच्छा उदाहरण ख़ुद हमारा देश है जिसका जीडीपी लगभग तीन ट्रिलियन डॉलर के आसपास है।

भारत आज विश्व की छठी बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है, तो उसका मुख्य कारण हमारा घरेलू डिमांड है, सवा अरब की आबादी की डिमांड ने भारत को अर्थव्यवस्था में एक बड़ा मक़ाम दिलाया है। पिछले दो-तीन दशक की आर्थिक प्रगति में हमारी कथित समस्या 'जनसंख्या' का बड़ा योगदान रहा है। इन्सानी आबादी अपने आपमें रिसोर्स होता है, आबादी पूंजी होती है, ये उस क़ौम और देश पर निर्भर करता है कि वो आबादी का इस्तेमाल करते हैं या बर्बाद करते हैं। पश्चिम में फेमिनिज्म की जो शुरुआत हुई थी उसका सबसे मुख्य कारण यही था कि बाज़ार को सस्ता लेबर चाहिए था और बाज़ार में लेबर की कमी न हो इसके लिए महिला सशक्तिकरण का नारा दिया गया, और महिलाओं की बड़ी तादाद को घर से बाहर निकल कर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, बाद में फेमिनिज्म में बहुत-सी चीज़ें जुड़ गई, अलग-अलग विचारधाराओं ने उस आंदोलन को अपना हित साधने के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया जो एक अलग बहस का विषय है। लेकिन फेमिनिज्म की शुरुआत ह्यूमन रिसोर्स की कमी को पूरा करने के लिए ही हुई थी।

पहले अमेरिका में काले लोग ग़ुलामी का जीवन जीते थे, अमेरिका में ग़ुलामी ख़त्म की गई, जिसके विरोध में वहां गृह युद्ध भी हुआ, ग़ुलामी ख़त्म करने का मुख्य कारण भी लेबर की कमी को पूरा करना था, उत्तरी क्षेत्र के इंडस्ट्रीज़ को लेबर की ज़रूरत थी जो दक्षिणी क्षेत्र के खेतों में काम कर रहे

जनसंख्या नियंत्रण के समर्थक कहते फिरते हैं कि बढ़ती जनसंख्या ग़रीबी का कारण बनती है, लेकिन पिछले सौ साल के मानव इतिहास के अध्ययन से हम ये जान सकते हैं कि पिछले सौ साल में जितनी जनसंख्या वृद्धि हुई है उसकी तुलना में मानव समाज ने ज़्यादा आर्थिक प्रगति की है। खाद्यान्न से लेकर मानव उपभोग की वस्तुओं के उत्पादन में बड़े पैमाने पर वृद्धि हुई है। लोगों का जीवन स्तर बेहतर हुआ है, हालांकि व्यवस्था अभी भी भेदभावपूर्ण है। अमीरी और ग़रीबी में बड़ा अंतर होने के बावजूद ऐसा है।



ग़ुलामों से पूरी हो सकती थी, इसलिए ग़ुलामी ख़त्म कर दिया गया और बाज़ार में लेबर की कमी ख़त्म हुई । कई साल पहले दिल्ली जाते हुए मेरे साथ एक व्यक्ति सफ़र कर रहे थे जो सिंगापूर की किसी कम्पनी में मैनेजर थे बातों-बातों में ही वो कहने लगे कि जब हम छोटे थे तब हमें स्कूल में पढ़ाया जाता था कि भारत की ग़रीबी की वजह इसकी बढ़ती आबादी है, जबकि आज भारत की सुधरती अर्थव्यवस्था की वजह ये बतलाई जाती है कि यहां सस्ते और स्किल्ड श्रमिक उपलब्ध हैं जो कि उसी बढ़ती आबादी की वजह से पैदा हुए हैं। आगे उन्होंने कहा कि मुझे समझ नहीं आता कि पहले कहने वाले सही थे या आज कहने वाले सही हैं, क्योंकि अगर पहले सभी लोगों ने आबादी कन्ट्रोल कर लिया होता तो शायद भारत दुनिया को सस्ता श्रम उपलब्ध नहीं करवा पाता और न ही ये आर्थिक तरक़्क़ी हमें देखने को मिलती जो हम देख रहे हैं।

जनसंख्या नियंत्रण के समर्थक कहते फिरते हैं कि बढ़ती जनसंख्या ग़रीबी का कारण बनती है, लेकिन पिछले सौ साल के मानव इतिहास के अध्ययन से हम ये जान सकते हैं कि पिछले सौ साल में जितनी जनसंख्या वृद्धि हुई है उसकी तुलना में मानव समाज ने ज़्यादा आर्थिक प्रगति की है। खाद्यान्न से लेकर मानव उपभोग की वस्तुओं के उत्पादन में बड़े पैमाने पर वृद्धि हुई है। लोगों का जीवन स्तर बेहतर हुआ है, हालांकि व्यवस्था अभी भी भेदभावपूर्ण है। अमीरी और ग़रीबी में बड़ा अंतर होने के बावजूद ऐसा है। अगर अमीरी और ग़रीबी में अंतर समाप्त कर दिया जाए और दौलत का न्यायपूर्ण वितरण हो तब जनसंख्या वृद्धि के साथ लगे हुए ग़रीबी के डर से छुटकारा हासिल हो जाएगा वास्तविकता ये है कि हमारे देश में जनसंख्या से बड़ी समस्या शासन व्यवस्था है, डिसट्रिब्यूशन ऑफ़ वेल्थ और डिसट्रिब्यूशन ऑफ़ रेसोर्सेज़ की समस्या है।

समाज में भारी असमानता है। अमीरी और ग़रीबी के बीच गहरी खाई है। हम अस्ल समस्या से ध्यान मोड़ने के लिए जनसंख्या को समस्या बताने लगते हैं। अगर हम आर्थिक समृद्धि को इन्साफ़ के साथ अपनी समस्त जनसंख्या तक पहुंचा सकें तो जिस जनसंख्या को हम disguise समझते हैं यही हमारे लिए blessing बन जाएगी इसलिए क़ुरआन कहता है–और निर्धनता के डर से अपनी सन्तान की हत्या न करो; हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी (सूरह अल अनाम)। ■■

नारी विमर्श



हुमा मसीह

फ़िलिस्तीन की प्रमुख महिला आंदोलनकारी

आज जब हम फ़िलिस्तीन के आंदोलन और उनके अपनी आज़ादी, हक़ और अपनी सरज़मीन के लिए क़ुर्बान हो जाने के जज़्बे की तारीफ़ करते नहीं थक रहे हैं, उस वक़्त एक चीज़ जो हमें फ़िलिस्तीनियों के समाज से सीखनी चाहिए वो यह कि वहां के समाज ने अपनी औरतों को बराबर के अधिकार दिए हैं। जब कोई समाज अपनी औरतों के उनके सारे हक़ देता है तो वो उसके आंदोलनों में भी परिलक्षित होता है।

महिलाओं को मिली इस बराबरी और समाज में उनकी सक्षम उपस्थिति ने फ़िलिस्तीन के आंदोलन को ऐसी मज़बूती दी है कि वो अपने मुल्क को इज़राइल जैसे आधुनिक तकनीक से लैस ताक़त के सामने घुटने नहीं टेकने देती हैं।

फ़िलिस्तीनी महिलाएं 1920 से ब्रिटिश शासन के दौरान फ़िलिस्तीन के संघर्ष के शुरुआती दिनों से ही मर्दों के साथ-साथ विरोध दर्ज करवाती आई हैं। उन्होंने तब से लेकर अब तक कई चेरिटेबल ट्रस्ट बनाए और राजनीति में पहचान हासिल की।

अगर हम फ़िलिस्तीन के पूरे आंदोलन पर नज़र डालें तो हमें वहां मर्दों के बराबर औरतें खड़ी नज़र आएंगी जो आंदोलन को कामयाब बना रही हैं।

फ़िलिस्तीन की प्रमुख महिला आंदोलनकारी

लैला ख़ालिद

लैला ख़ालिद 1944 में फ़िलिस्तीन के हाइफा में पैदा हुई थी। जो वर्तमान में इज़राइल के अवैध क़ब्ज़े में है। लैला ख़ालिद फ़िलिस्तीन



के प्रतिशोध की आवाज़ का सबसे पहला और प्रतिनिधि चेहरा है। मात्र 26 साल की उम्र में उन्होंने अपने देश के दुश्मनों के दो हवाईजहाज़ हाईजेक करके उन्हें बहुत नुक़सान पहुंचाया और फ़िलिस्तीनी महिलाओं और युवाओं के सामने क्रांति की ज़बरदस्त मिसाल पेश की। पहले 1969 और फिर 1970 में प्लेन हाईजेक करके वो फ़िलीस्तीनी मूवमेंट का ख़ास चेहरा बन गई थी। उनकी जीवनी लिखने वाली लेखिका सारा ईर्विंग उन्हें फ़िलिस्तीन की चे ग्वेरा क़रार देती हैं।

मोना अल-कुर्द



मोना फ़िलिस्तीन के शेख़ जर्राह से ताल्लुक़ रखने वाली एक जर्नलिस्ट हैं, वो लगातार शेख़ जर्राह में इज़राइल द्वारा किए जाने वाले ज़ुल्म पर लिख रही हैं।

मोना शेख़ जर्राह और फ़िलिस्तीन के लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन हासिल करने के लिए अपने लेखों के ज़रिए फ़िलिस्तीन की कहानी दुनिया तक पहुंचाने को अपनी ज़िम्मेदारी मानती हैं।

रज़ान अल-नज्जार



रज़ान अल-नज्जार 1997 ग़ाज़ा पट्टी में पैदा हुई थी। बचपन से ही उनका सपना डॉक्टर बनने का था, लेकिन अपने परिवार के आर्थिक हालत के मद्देनज़र वो इस दिशा में आगे नहीं बढ़ पाईं, लेकिन वो एक अच्छी नर्स बनी।

घायल आंदोलनकारियों की मरहम पट्टी करते वक़्त इज़राइली सेना की गोली खाकर रज़ान शहीद हो गई थी। उस वक़्त रज़ान की उम्र सिर्फ़ 21 साल थी। रज़ान इज़राइल के हमलों में घायल लोगों की सेवा किया करती थीं।

अल-जज़ीरा को दिए एक इंटरव्यू में रज़ान ने कहा था कि, "औरतें ख़तरों का बहादुरी से मुक़ाबला कर सकती हैं। हमारी सोसाइटी में औरतों को अक्सर जज किया जाता है, लेकिन समाज को हमारे मज़बूत रूप को स्वीकार करना होगा।"

21 साल की जिस उम्र में अक्सर युवा जहां अपने करियर को लेकर भी कोई फ़ैसला नहीं कर पाते हैं उस उम्र में रज़ान अपने मुल्क के घायल लोगों की सेवा करते हुए शहीद हो गई।

रशेल कोरी



रशेल कोरी एक अमेरिकन थी। 1979 में उनका जन्म वॉशिंगटन में हुआ था। फ़िलिस्तीन में अपने एक असाइनमेंट के सिलसिले में आई थी। उसके बाद उन्होंने फ़िलिस्तीन में शांति की स्थापना को ही अपना मक़सद बना लिया था।

रशेल फ़िलिस्तीन में शांति की स्थापना के लिए लगातार कई समूहों के साथ मिलकर काम कर रही थी। सन् 2003 में एक फ़िलिस्तीनी घर को बचाने के दौरान इज़राइल की सेना ने उनपर बुलडोजर चढ़ा दिया था, इज़राइल द्वारा की गई इस हिंसा में रशेल की जान चली गई थी।

हिंद अल-हुसिनी

हिंद फ़िलिस्तीन की पहली औरत थी जिन्होंने इज़राइल के हमलों में अनाथ हुए बच्चों के लिए अनाथालय शुरू किया और उनकी अच्छी एजुकेशन की पूरी व्यवस्था की।

हिंद अल-हुसिनी का जन्म येरुशलम में 1916 में हुआ था उनकी प्राथमिक शिक्षा अल-अक़्सा मस्जिद में पास ही स्थित एक स्कूल में संपन्न हुई।

हिंद ने 1948 से सामाजिक गतिविधियों पर ध्यान देना शुरू किया। उन्होंने महिलाओं के लिए सोशल कॉरपोरेशन सोसाइटी का गठन किया, जिसकी बाद में 22 शाखाएं बनी जिसके तहत महिलाओं और बच्चों के कल्याण के लिए कई काम किए गए।

एक बार हिंद पुराने यरुशलम से गुज़र रही थी उन्हें बच्चों का एक ग्रुप इधर-उधर भटकते नज़र आया। इज़राइल के हमले में उन सभी बच्चों ने अपने माता-पिता को खो दिया था। सभी बच्चे बहुत बुरी हालत में थे। उनमें सबसे बड़े बच्चे की उम्र नौ साल थी। हिंद उन सभी बच्चों को अपने घर ले आई। उसके बाद उन्होंने एक चेरिटेबल सोसाइटी बनाकर अनाथ बच्चों की शिक्षा के लिए सुनियोजित तरीक़े से काम शुरू कर दिया। इस चेरिटेबल सोसाइटी को उन्होंने नाम दिया "द होम ऑफ द अरब चाइल्ड"।

तसहील बरनात

तसहील फ़िलिस्तीन की आम औरतों के बीच से आने वाली प्रतिरोध की प्रतीक है जो अपने परिवारों के साथ इज़राइल के क़ब्ज़े का विरोध करती हैं। यह ख़ुद कई बार हिंसा का शिकार हुईं इनके पति और बेटों को जेल में डाल दिया गया, लेकिन इन्होंने विरोध की आवाज़ को रुकने नहीं दिया।

हिबा अल-ज़िंदवी

1948 में युद्ध के दौरान हिबा के माता-पिता लेबनान चले गए थे, वहीं हिबा का भी पालन-पोषण हुआ। हिबा इज़राइल के क़ब्ज़े के विरोध में और फ़िलिस्तीन की पहचान के लिए संघर्ष करती हैं।

हनान अशरवी

हनान अशरवी फ़िलिस्तीन की जानी-मानी राजनेता हैं और फ़िलिस्तीनी नेशनल कॉन्सिल की चुनी गई सबसे पहली महिला हैं। यह फ़िलिस्तीन में शांति बहाली के लिए काम करती हैं।

हुवैदा अर्राफ़

हुवैदा फ़िलिस्तीनी मूल से ताल्लुक़ रखती हैं जिनका जन्म अमेरिका में हुआ था।

हुवैदा मानवाधिकार कार्यकर्ता होने के साथ-साथ एक वकील भी हैं और इंटरनेशनल सॉलीडेरिटी मूवमेंट की सह-संस्थापक हैं। यह मूवमेंट फ़िलिस्तीन में अहिंसक तरीक़ों का

इस्तेमाल करके फ़िलिस्तीन के हक़ और आज़ादी की बात करता है।

इन सबके अलावा फ़िलिस्तीन की हर औरत किसी न किसी रूप में आंदोलन की आवाज़ बुलंद करती है।

फ़िलिस्तीन की यह आंदोलनकारी महिलाएं कहीं न कहीं मुस्लिम दुनिया को यह संदेश देती नज़र आती हैं कि "समाज में औरतों की भूमिका उनके आंदोलन में किए गए कामों को देखकर तय हो न कि महिलाओं को घरों तक सीमित कर देने वाले कुछ मुस्लिम उलेमाओं की बातों के आधार पर तय हो।"

फ़िलिस्तीन में हाल ही में हुए हमले के बाद शहर की सड़कों पर इकट्ठा हो गए मलबे को साफ़ करने में भी महिलाएं आगे हैं। फ़िलिस्तीन के लिए जंग लड़ती महिलाओं में डॉक्टर भी हैं, नर्स भी हैं, जर्नलिस्ट भी हैं, राजनेता भी हैं मानो कि वो सब कुछ हैं और शहर को फिर से साफ़ करके सुंदर बनाने में भी वहीं हैं।

इन फ़िलिस्तीनी महिलाओं से सीखना चाहिए उन राष्ट्रवादियों, अवसरवादियों और भौतिकवादियों को जो अपने देश में क़ाबिलियत हासिल करके ऐशो-आराम के लिए विदेश चले जाते हैं, इन लोगों को सीखना चाहिए कि फ़िलिस्तीन की यह महिलाएं हर एतबार से क़ाबिल होते हुए अपने देश के आत्म-सम्मान के लिए लड़ रही हैं। इन औरतों के पास मौक़ा और क़ाबिलियत दोनों होती हैं जिससे वो किसी भी देश में आराम की नौकरी और ज़िंदगी पा सकती हैं, लेकिन उस आराम को ताक़ पर रखकर ये महिलाएं अपने वतन को आज़ाद करने के लिए संघर्षरत हैं।

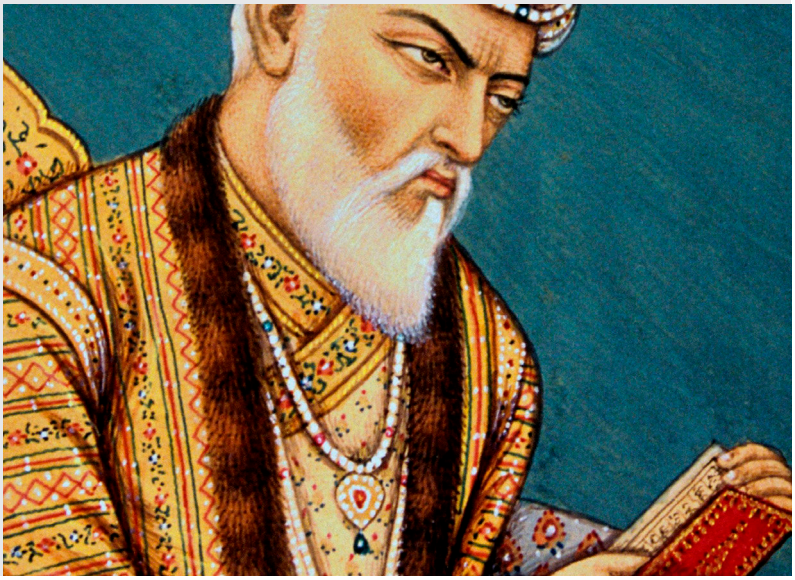
इन फ़िलिस्तीन की महिलाओं से सीखना चाहिए उन नारीवादियों को जिनका नारीवाद पूंजीवाद और भौतिकवाद की शरण में रहकर महिला उत्थान की बात करता है। अगर आज कहीं दुनिया में नारीवाद की बात होती है और उस नारीवाद के आदर्शों में ये फ़िलिस्तीनी महिलाएं सर्वोपरि नहीं है तो वो नारीवाद नकार दिए जाने के क़ाबिल है। ■■



इतिहास का सच



प्रो॰ बी॰एन॰ पाण्डेय



औरंगज़ेब के कुछ फ़रमान

प्रो॰ बी॰एन॰ पाण्डेय के विचारों से संकलित

ये फ़रमान इस प्रकार है: ''रामनगर (बनारस) के महाराजाधिराज राजा राम सिंह ने हमारे दरबार में अर्ज़ी पेश की है कि उनके पिता ने गंगा नदी के किनारे अपने धार्मिक गुरु भगवत गोसाईं के निवास के लिए एक मकान बनवाया था। अब कुछ लोग गोसाईं को परेशान कर रहे हैं। अतः यह शाही फ़रमान जारी किया जाता है कि इस फ़रमान के पहुंचते ही सभी वर्तमान एवं आने वाले अधिकारी इस बात का पूरा ध्यान रखें कि कोई भी व्यक्ति गोसाईं को परेशान न करे एवं डरा-धमका न सके और न उनके मामले में हस्तक्षेप करे, ताकि वे पूरे मनोयोग से हमारी ईशप्रदत्त सल्तनत के स्थायित्व के लिए प्रार्थना करते रहें। इस फ़रमान पर तुरंत अमल किया जाए।'' (तारीख़ 17 रबीउस्सानी 1091 हि॰)

जंगमबाड़ी मठ के महंत के पास मौजूद कुछ फ़रमानों से पता चलता है कि औरंगजेब कभी यह सहन नहीं करता था कि उसकी प्रजा के अधिकार किसी प्रकार से भी छीने जाएं, चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान। वह अपराधियों के साथ सख़्ती से पेश आता था। इन फ़रमानों में एक जंगम लोगों (शैव सम्प्रदाय के एक मत के लोग) की ओर से एक मुसलमान नागरिक नज़ीर बेग के विरुद्ध शिकायत के सिलसिले में है। यह मामला औरंगजेब के दरबार में लाया गया, जिस पर शाही हुक्म दिया गया कि बनारस, सूबा इलाहाबाद के अफ़सरों को सूचित किया जाता है कि परगना बनारस के नागरिकों, अर्जुनमल और जंगमियों, ने शिकायत की है कि बनारस के एक नागरिक नज़ीर बेग ने क़स्बा बनारस में उनकी पांच हवेलियों पर क़ब्ज़ा कर लिया है उन्हें हुक्म दिया जाता है कि यदि शिकायत सच्ची पाई

इतिहासकार इसका बहुत उल्लेख करते हैं कि अहमदाबाद में नागर सेठ के बनवाए हुए चिंतामणि मंदिर को ध्वस्त किया गया, परंतु इस वास्तविकता पर पर्दा डाल देते हैं कि उसी औरंगज़ेब ने उसी नागर सेठ के बनवाए हुए शत्रुंजया और आबू मंदिरों को काफ़ी बड़ी जागीरें प्रदान कीं।



जाए और जायदाद की मिल्कियत का अधिकार प्रमाणित हो जाए तो नज़ीर बेग को उन हवेलियों में दाख़िल न होने दिया जाए, ताकि जंगमियों को भविष्य में अपनी शिकायत दूर करवाने के लिए हमारे दरबारों में न आना पड़े।

इस फ़रमान पर 11 शाबान, 13 जुलूस (1072 ई०) की तारीख़ दर्ज है। इसी मठ के पास मौजूद एक-दूसरे फ़रमान में जिस पर पहली रबीउल-अव्वल 1078 हि० की तारीख़ दर्ज है, उल्लेख है कि ज़मीन का क़ब्ज़ा जंगमियों को दिया गया। फ़रमान में है-

''परगना हवेली बनारस के सभी वर्तमान और भावी जागीरदारों एवं करोड़ियों को सूचित किया जाता है कि शहंशाह के हुक्म से 178 बीघा ज़मीन जंगमियों को दी गई। पुराने अफ़सरों ने इसकी पुष्टि की थी और उस समय के परगना के मालिक की मुहर के साथ सबूत पेश किया गया है कि ज़मीन पर उन्हीं का हक़ है। अतः शहंशाह की जान के सदक़े के रूप में यह ज़मीन उन्हें दी जाए और फिर किसी प्रकार की दख़लंदाज़ी न होने दी जाए, ताकि जंगमी लोग उसकी आमदनी से अपनी देख-रेख कर सकें।''

इस फ़रमान से केवल यही पता नहीं चलता कि औरंगजेब स्वभाव से न्यायप्रिय था, बल्कि यह भी साफ़ नज़र आता है कि वह इस तरह की जायदादों के साथ कोई भेदभाव नहीं बरतता था। जंगमियों को 178 बीघा ज़मीन संभवतः स्वयं औरंगज़ेब ही ने प्रदान की थी, क्योंकि एक-दूसरे फ़रमान (तिथि 5 रमज़ान 1071 हि०) में इसका स्पष्टीकरण किया गया है कि यह ज़मीन मालगुज़ारी मुक्त है। औरंगज़ेब ने एक-दूसरे फ़रमान (1098 हि०) के द्वारा एक दूसरी हिन्दू धार्मिक संस्था को भी जागीर प्रदान की। फ़रमान में कहा गया है-

''बनारस में गंगा नदी के किनारे बेनी-माधों घाट पर दो प्लाट ख़ाली है एक मर्कज़ी मस्जिद के किनारे रामजीवन गोसाईं के घर के सामने और दूसरा उससे पहले। ये प्लाट बैतुलमाल की मिल्कियत है। हमने यह प्लाट रामजीवन गोसाईं और उनके लड़के को 'इनाम' के रूप में प्रदान किया, ताकि उक्त प्लाटों पर ब्राह्मणों एवं फ़क़ीरों के लिए रिहायशी मकान बनाने के बाद वे ख़ुदा की इबादत और हमारी ईशप्रदत्त सल्तनत के स्थायित्व के लिए दुआ और प्रार्थना करने में लग जाएं। हमारे बेटों, वज़ीरों, अमीरों, उच्च पदाधिकारियों, दरोग़ा और वर्तमान एवं भावी कोतवालों के लिए अनिवार्य है कि वे इस आदेश के पालन का ध्यान रखें और उक्त प्लाट, उपर्युक्त व्यक्ति और उसके वारिसों के क़ब्ज़े ही में रहने दें और उनसे न कोई मालगुज़ारी या टैक्स लिया जाए और न उनसे हर साल नई सनद मांगी जाए।''

लगता है औरंगज़ेब को अपनी प्रजा की धार्मिक भावनाओं के सम्मान का बहुत अधिक ध्यान रहता था। हमारे पास औरंगज़ेब का एक फ़रमान (2 सफ़र 9 जुलूस) है जो असम के शहर गोहाटी के उमानन्द मंदिर के पुजारी सुदामा ब्राह्मण के नाम है। असम के हिन्दू राजाओं की ओर से इस मंदिर और उसके पुजारी को ज़मीन का एक टुकड़ा और कुछ जंगलों की आमदनी जागीर के रूप में दी गई थी, ताकि भोग का ख़र्च पूरा किया जा सके और पुजारी की आजीविका चल सके। जब यह प्रांत औरंगज़ेब के शासन-क्षेत्र में आया, तो उसने तुरंत ही एक फ़रमान के द्वारा इस जागीर को यथावत रखने का आदेश

दिया।

हिन्दुओं और उनके धर्म के साथ औरंगज़ेब की सहिष्णुता और उदारता का एक और सबूत उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर के पुजारियों से मिलता है। यह शिवाजी के प्रमुख मंदिर में से एक है, जहां दिन-रात दीप प्रज्वलित रहता है। इसके लिए काफ़ी दिनों से प्रतिदिन चार सेर घी वहां की सरकार की ओर से उपलब्ध कराया जाता था और पुजारी कहते हैं कि यह सिलसिला मुग़लकाल में भी जारी रहा। औरंगज़ेब ने भी इस परम्परा का सम्मान किया।

इस सिलसिले में पुजारियों के पास दुर्भाग्य से कोई फ़रमान तो नहीं उपलब्ध है, परन्तु एक आदेश की नक़ल ज़रूर है जो औरंगज़ेब के काल में शहज़ादा मुराद बख़्श के तरफ़ से जारी किया गया था। 5 शव्वाल 1061 हि॰ को यह आदेश शहंशाह की ओर से शहज़ादों ने मंदिर के पुजारी देव नारायण के एक आवेदन पर जारी किया था। वास्तविकता की पुष्टि के बाद इस आदेश में कहा गया है कि मंदिर के दीप के लिए चबूतरा कोतवाला के तहसीलदार चार सेर (अकबरी) घी प्रतिदिन के हिसाब से उपलब्ध कराएं। इसकी नक़ल मूल आदेश के जारी होने के 93 साल बाद (1153 हिजरी) को मुहम्मद सअदुल्लाह ने पुनः जारी की।

साधारणतया इतिहासकार इसका बहुत उल्लेख करते हैं कि अहमदाबाद में नागर सेठ के बनवाए हुए चिंतामणि मंदिर को ध्वस्त किया गया, परंतु इस वास्तविकता पर पर्दा डाल देते हैं कि उसी औरंगज़ेब ने उसी नागर सेठ के बनवाए हुए शत्रुंजया और आबू मंदिरों को काफ़ी बड़ी जागीरें प्रदान कीं।

निःसंदेह इतिहास से यह प्रमाणित होता है कि औरंगज़ेब ने बनारस के विश्वनाथ मंदिर और गोलकुंडा की जामा मस्जिद को ढा देने का आदेश दिया था, परंतु इसका कारण कुछ और ही था। विश्वनाथ मंदिर के सिलसिले में घटनाक्रम यह बयान किया जाता है कि जब औरंगज़ेब बंगाल जाते हुए बनारस के पास से गुज़र रहा था तो उसके क़ाफ़िले में शामिल हिन्दू राजाओं ने बादशाह से निवेदन किया कि वहां क़ाफ़िला एक दिन ठहर जाए तो उनकी रानियां बनारस जाकर गंगा नदी में स्नान कर लेंगी और विश्वनाथ जी के मंदिर में श्रद्धा सुमन भी अर्पित कर आएंगी।

औरंगज़ेब ने तुरंत ही यह निवेदन स्वीकार कर लिया और क़ाफ़िले के पड़ाव से बनारस तक पांच मील के रास्ते पर फ़ौजी पहरा बैठा दिया। रानियां पालकियों में सवार होकर गईं, परंतु एक रानी (कच्छ की महारानी) वापस नहीं आईं, तो उनकी बड़ी तलाश हुई, लेकिन पता नहीं चल सका। जब औरंगज़ेब को मालूम हुआ तो उसे बहुत ग़ुस्सा आया और उसने अपने फ़ौज के बड़े-बड़े अफ़सरों को तलाश के लिए भेजा।

आख़िर में उन अफ़सरों ने देखा कि गणेश की मूर्ति, जो दीवार में जड़ी हुई है, हिलती है। उन्होंने मूर्ति हटवाकर देखा तो तहख़ाने की सीढ़ी मिली और गुमशुदा रानी उसमें पड़ी रो रही थी। उसकी इज़्ज़त भी लुटी गई थी और उसके आभूषण भी छीन लिए गए थे। यह तहख़ाना विश्वनाथ जी की मूर्ति के ठीक नीचे था। राजाओं ने इस हरकत पर अपनी नाराज़गी जताई और विरोध प्रकट किया।

चूंकि यह बहुत घिनौना अपराध था, इसलिए उन्होंने कड़ी से कड़ी कार्रवाई करने की मांग की। उनकी मांग पर औरंगज़ेब ने आदेश दिया कि चूंकि पवित्र स्थल को अपवित्र किया जा चुका है। अतः विश्वनाथ जी की मूर्ति को कहीं और ले जाकर स्थापित कर दिया जाए और मंदिर को गिरा कर ज़मीन को बराबर कर दिया जाए और महंत को गिरफ़्तार कर लिया जाए। डॉक्टर पट्टभि सीता रमैया ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक, 'द फेदर्स एंड द स्टोंस' में इस घटना को दस्तावेज़ों के आधार पर प्रमाणित किया है। पटना म्यूज़ियम के पूर्व क्यूरेटर डॉ॰ पी॰एल॰ गुप्ता ने भी इस घटना की पुष्टि की है।

गोलकुंडा की जामा-मस्जिद की घटना यह है कि वहां के राजा, जो तानाशाह के नाम से प्रसिद्ध थे, रियासत की मालगुज़ारी वसूल करने के बाद दिल्ली को हिस्सा नहीं भेजते थे। कुछ ही वर्षों में यह रक़म करोड़ों की हो गई। तानाशाह ने यह ख़ज़ाना एक जगह ज़मीन में गाड़ कर उस पर मस्जिद बना दी। जब औरंगज़ेब को इसका पता चला तो उसने आदेश दिया कि यह मस्जिद गिरा दी जाए। अतः गड़ा हुआ ख़ज़ाना निकाल कर उसे जनकल्याण के कामों में ख़र्च किया गया। ये दोनों मिसालें यह साबित करने के लिए काफ़ी हैं कि औरंगज़ेब न्याय के मामले में मंदिर और मस्जिद में कोई फ़र्क़ नहीं समझता था।

''दुर्भाग्य से मध्यकाल और आधुनिक काल के भारतीय इतिहास की घटनाओं एवं चरित्रों को इस प्रकार तोड़-मरोड़ कर मनगढ़ंत अंदाज़ में पेश किया जाता रहा है कि झूठ ही ईश्वरीय आदेश की सच्चाई की तरह स्वीकार किया जाने लगा, और उन लोगों को दोषी ठहराया जाने लगा जो तथ्य और मनगढ़ंत बातों में अन्तर करते हैं। आज भी साम्प्रदायिक एवं स्वार्थी तत्व इतिहास को तोड़ते-मरोड़ते और उसे ग़लत रंग देने में लगे हुए हैं।''

■■

जन-गण-मन



मुहम्मद यूसुफ़ 'मुन्ना'

सवालों से भागती सरकार

जो काम मीडिया को करना चाहिए जनता कर रही है। चूंकि मीडिया जनता की आवाज़ नहीं बन रही इसलिए उसे सत्ता से सवाल करने के लिए सोशल मीडिया और पोस्टर का सहारा लेना पड़ रहा है। यह जनता की आवाज़ की ताक़त है कि सरकार पिछले कुछ सालों से अनेक नियमों का हवाला देकर सोशल मीडिया को नियंत्रित करने की कोशिश कर रही है। इसमें वह एक हद तक सफल भी रही है, लेकिन लोगों की आवाज़ न कभी दबाई जा सकी है, न दबाई जा सकेगी।

यहां जिस सरकार को जनता चुनती है, उससे सवाल पूछना अपराध कब से हो गया? जब जनता को सवाल पूछने से रोका जाए और उसकी आवाज़ को दबाया जाए तो यह सवाल उठना स्वाभाविक है। जो काम मीडिया को करना चाहिए जनता कर रही है। चूंकि मीडिया जनता की आवाज़ नहीं बन रही इसलिए उसे सत्ता से सवाल करने के लिए सोशल मीडिया और पोस्टर का सहारा लेना पड़ रहा है। यह जनता की आवाज़ की ताक़त है कि सरकार पिछले कुछ सालों से अनेक नियमों का हवाला देकर सोशल मीडिया को नियंत्रित करने की कोशिश कर रही है। इसमें वह एक हद तक सफल भी रही है, लेकिन लोगों की आवाज़ न कभी दबाई जा सकी है, न दबाई जा सकेगी।

कोरोना महामारी से जिस तरह लोग प्रभावित हुए और उनको स्वास्थ्य सेवाएं नहीं मिल सकीं उसको लेकर लोगों में काफ़ी रोष है। कहा तो यह भी जा रहा है कि जितने लोग कोरोना से नहीं मरे उससे ज़्यादा लोग इलाज न मिल पाने की वजह से मर गए। न तो लोगों को समय पर दवा मिल पा रही थी, न बेड, न ऑक्सीजन। इंतिहा यह कि कोरोना वैक्सीन की भी भारी कमी की ख़बरें आ रही है। मीडिया जनता का पक्ष दिखाने की जगह हालात के सामने शुतुरमुर्ग़ बना हुआ है। ऐसे में मात्र पोस्टर लगाकर सरकार से सवाल करने पर राजधानी दिल्ली में 25 लोगों की गिरफ़्तारी का विरोध होना स्वाभाविक है।

गिरफ़्तारी का मामला मीडिया से लेकर सोशल मीडिया तक चर्चा में रहा और इसको लोगों की आवाज़ बन्द करने की कोशिशों से जोड़ कर देखा गया। जिन लोगों को गिरफ़्तार किया गया उनमें ड्राइवर, प्रिंटिंग प्रेस चलाने, दिहाड़ी काम करने वाले लोग शामिल हैं। ये लोग सिर्फ़ अपना काम कर रहे थे। गिरफ़्तारी का कारण बताया गया है कि कोरोना महामारी के बीच पोस्टर लगाना

कोविड-19 गाइडलाइंस का उल्लंघन है। हालांकि यह मामला अब सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है। इस गिरफ़्तारी के विरोध में कांग्रेस और आप पार्टी ने कोविड रोधी वैक्सीन के निर्यात पर सवाल उठाते हुए गिरफ़्तारी किए गए लोगों को रिहा करने की अपील की, लेकिन इस अपील का सरकार पर कोई असर नहीं हुआ। होता भी कैसे जब महीनों से धरने पर बैठे किसानों की मांग सरकार नहीं सुन रही है, तो भला विपक्षियों की बात कैसे सुन लेगी।

कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि 'क्या प्रधानमंत्री की आलोचना से जुड़े पोस्टर लगाना अब कोई अपराध है? क्या भारत अब मोदी दंड संहिता से संचालित है? अनेक विपक्षी नेताओं ने विरोध स्वरूप ट्विटर की अपनी डीपी पर पोस्टर की फ़ोटो लगाया। यदि लोगों को वैक्सीन, दवा और ऑक्सीजन नहीं मिलता, तो उनको प्रधानमंत्री से सवाल पूछने का अधिकार है।

ऐसे समय जबकि कोरोना के कारण देश में अफ़रा-तफ़री का माहौल है। बीमारों के लिए बेड, ऑक्सीज़न, दवाई, वैक्सीन की भारी क़िल्लत है। स्वास्थ्य ढांचा पूरी तरह चरमरा गया है। जिन दवाओं की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, वह मार्केट से ग़ायब है। दवा माफिया कालाबाज़ारी कर रहे हैं। नक़ली दवाएं धड़ल्ले से बिक रही हैं, गोदी मीडिया सरकार की जगह सिस्टम को दोषी ठहरा रहा है, ऐसे में आम जनता को सरकार से सुविधाएं मांगने और सवाल करने का पूरा अधिकार है।

कोरोना काल में भी किसान महीनों से जाड़ा, गर्मी, आंधी और बारिश के बीच अपनी मांगों को लेकर देश के अनेक हिस्सों में धरने पर बैठे



हैं। अनेक किसानों की मौत भी हो गई लेकिन मजाल है कि सरकार उनकी बात सुन ले या उनकी मांगें मान ले । कोरोना और अन्य गंभीर बीमारी से जूझ रहे लोग स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली से परेशान हैं। देश में ग़रीबी, बेरोज़गारी पहले से चरम पर है। पिछले एक साल में कारोबार अपनी आख़िरी सांस ले रहा है। जनता के टैक्स का पैसा कारोबार, अर्थव्यवस्था, रोज़गार की दशा सुधारने में लगाने की जगह, प्रधानमंत्री के लिए विशेष हवाई जहाज़ ख़रीदने, सेन्ट्रर विस्टा और मूर्तियां बनाने में ख़र्च किया जा रहा है।

जो सरकार विदेशों में कोविड वैक्सीन बेच कर मीडिया में वैक्सीन गुरु बनना चाहती थी, वह देश के भीतर कोरोना से निपटने में पूरी तरह नाकाम साबित हुई। बीबीसी की एक रिपोर्ट में विदेश मंत्रालय के आंकड़ों के हवाले से कहा गया कि भारत ने 90 देशों को 6 करोड़ 60 लाख वैक्सीन दी, जिनमें 16 फ़ीसदी वैक्सीन दान में दी गई। आज कहा जा रहा है कि मांग के अनुसार वैक्सीन नहीं है। जो लोग इन लापरवाहियों को लेकर सरकार से सवाल करना चाहते हैं, उनकी आवाज़ दबाने की कोशिश हो रही है।

आम आदमी को छोड़ दीजिए, सवाल करने पर उत्तर प्रदेश, उन्नाव के एक रिटायर्ड आईएएस एसपी सूर्य प्रताप सिंह के ख़िलाफ़ मुक़दमा दर्ज किया जाता है। उन्होंने अपने ट्विटर अकाउंट पर लिखा था कि "67 लाशों को योगी सरकार ने गंगा तट पर जेसीबी से गड्ढा खोदकर दफ़न कर दिया। शवों का अंतिम संस्कार हिन्दू रीति-रिवाज से न करना हिंदुओं के लिए कलंक जैसा है। उन पर भ्रामक सूचना के ज़रिए जनमानस को भड़काने का प्रयास करने का आरोप लगाया गया तथा पुलिस ने उनके ख़िलाफ़ महामारी एक्ट, आपदा प्रबंधन एक्ट व आईटी एक्ट में मुक़दमा दर्ज कर दिया।

इसी तरह भाजपा के निशाने पर रही पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का कहना था कि कोरोना को प्रधानमंत्री की ओर से बुलाई गई वर्चुअल बैठक में मुख्यमंत्रियों को बोलने नहीं दिया गया। सवाल यह है कि जब सरकार को मुख्यमंत्रियों और बड़े अधिकारियों की आवाज़ से परेशानी है, तो आम आदमी की स्थिति का अंदाज़ा अपने आप लग जाता है। कहना ग़लत न होगा कि सरकार को स्वास्थ्य ढांचे में सुधार, सबको इलाज और कोरोना से हो रही मौतों से ज़्यादा चिंता अपनी-अपनी छवि की है। ■■

कविता



अबू अनीका

ग़ाज़ा के निहत्थे ज़िद्दियों के नाम...

निहत्थो! ज़िद्दियो!
तुम्हें शर्म नहीं आती
विश्व की चौथी सैन्य शक्ति से लड़ने में
प्रधान के लाडलों से लोहा लेने में
तुम दोहरे मुजरिम हो
जिद्दी भी निहत्थे भी
इतिहास और न्याय की रट लगाने से क्या होगा
क्या होगा तुम्हारे इमोशनल एजिटेशन से
इतिहास में ऊंची डिग्रियां-उपाधियां वो बांटते हैं अक्सर
न्याय की परिभाषा और व्याख्या उनकी होगी मोतबर
कम अक़्लो!
कभी तो अक़्ल की सुनो, हमेशा क्यों सुनते हो दिल की
कि अक़्ल वाले तरस खाते और हंसते हैं तुम पर
उन्हें देखो,अक़्लमंदों, दानिशमंदों को
जिन्होंने दिल को फ़क़त रक्त-शोधन संयंत्र माना है
वो कितने ख़ुश हैं 'अक़्ल' के घोड़े दौराने पर
सबक़ सीखो कभी तो अक़्ल को आज़ाद भी छोड़ो
निहत्थो, ज़िद्दियो!
क्या 'प्रधान' को हक़ नहीं इतना
कि अपने राज दुलारों को जहां चाहें बसाएं,
अपने गांव में
ये तो उनकी शराफ़त है
कि इसके बावजूद वो तुम से मोआहदे करते हैं
दिल रखने के लिए तुम्हारे,
अपनी "कौंसिल" में मुबाहसे करते हैं
निहत्थो!
गोलियां सीने पे खालो और सो जाओ
क्यों फ़रयाद करते हो इन्सानियत से,
इन्सानियत के दिले-नाज़ुक पर ये भी बार होता है।

दुनिया मेरे आगे



जुनैद अली
मध्य प्रदेश

फ़िलिस्तीन-इज़रायल संघर्ष :

युद्धविराम लेकिन अनिश्चितता बरक़रार

पश्चिमी एशिया पिछले सात दशकों से फ़िलिस्तीनियों और इज़रायल के बीच चलते संघर्ष के कारण निरंतर सुलगता रहा है। हालिया कशमकश और अशांति की शुरुआत पूर्वी यरुशलम के शेख़ जर्राह इलाक़े से फ़िलिस्तीनी परिवारों को निकालने की कोशिशों के साथ हुई, जिसे यहूदी अपनी ज़मीन बताते हैं और उस क्षेत्र में बलपूर्वक स्थापित होना चाहते हैं। फिर रमज़ान के पवित्र अवसर पर अल-अक़्सा मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए आने वाले मुसलमानों को इजरायली सुरक्षाकर्मियों ने बलपूर्वक रोकने का प्रयास किया। इसके विरोध में अरब आबादी वाले इलाक़ों और अल-अक़्सा मस्जिद कम्पाउंड में नमाज़ अदा करने आए लोगों और पुलिस के बीच झड़प हुई, जिसके बाद उन लोगों पर इजरायली सुरक्षाकर्मियों ने अमानवीय तरीक़े से 'रबर कोटेड बुलैट',आंसू गैस और स्टेन ग्रेनेड से हमला किया। इन हिंसक घटनाक्रमों की शुरुआत के बाद से इसराईल में भी कुछ जगहों पर इसराईली और अरब लोगों के बीच हिंसात्मक घटनाओं को देखा गया, जिसके कारण इसराईली सेना ने गृह युद्ध की आशंका जताई थी। फ़िलिस्तीनियों और इजरायलियों के बीच लगातार तनाव बना रहा है और अमूमन झड़पों की ख़बरें आती रही हैं, लेकिन वर्ष 2017 के बाद इस बार स्थिति इजरायली जुल्मो-सितम से बहुत अधिक ख़राब हुई। जिसे देखते हुए हमास ने इजरायली हुकूमत को अल्टीमेटम देते हुए हिंसात्मक गतिविधियों को तत्काल बंद करने को कहा, लेकिन इजरायली सरकार ने इसके जवाब में ग़ाज़ा क्षेत्र में हवाई हमला कर झड़पों को युद्ध में तब्दील कर दिया। इन हमलों में ग़ाज़ा इलाक़े में बड़े पैमाने पर जान-माल की हानि हुई है, जिस पर

हमास ने जवाबी कार्यवाही करते हुए इजरायल पर रॉकेटों की बौछार कर दी। हालांकि इजरायल के एयर डिफेंस सिस्टम 'आयरन डोम' ने हमास द्वारा दाग़े गए लगभग नब्बे प्रतिशत रॉकेटों को हवा में ही नष्ट कर दिया, लेकिन फिर भी लगभग दस प्रतिशत रॉकेट सुरक्षा तंत्र को भेदते हुए इजरायली क्षेत्र को निशाना बनाने में सफल रहे। इस युद्ध के संदर्भ में कुछ विश्लेषकों का ऐसा भी मानना रहा है कि बैंजामिन नेतन्याहू को लगातार कई चुनाव में स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने और भ्रष्टाचार से जुड़े कई प्रकरण उन पर दर्ज होने के कारण वो अपनी गिरती साख को बचाने के लिए युद्ध के विकल्प का चयन किया है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि इजरायल ने अपने ग़ैर-ज़िम्मेदाराना हवाई हमलों के ज़रिए ग़ाज़ा के सिविलियन इलाक़ों में ज़बरदस्त तरीक़े से बमबारी किया, जिसमें लगभग तीन सौ लोगों की मौतें हुई और मरने और ज़ख़्मी होने वालों में आम नागरिक तथा बच्चों की तादाद अधिक थी। इजरायली हवाई और मिज़ाइली हमलों ने एक-के-बाद-एक ग़ाज़ा के कई सिविलियन बहुमंज़िली इमारतों को ध्वस्त कर दिया, यहां तक कि अंतर्राष्ट्रीय मीडिया से जुड़ी एक बहुमंज़िली इमारत को भी नहीं बख़्शा गया और उसे भी ज़मींदोज़ कर दिया। इस इमारत में कई विदेशी न्यूज़ चैनलों के दफ़्तर मौजूद थे। इस घटना के बाद प्रख्यात न्यूज चैनल 'अल-जज़ीरा' ने एक बयान जारी कर कहा है कि इसराईली सरकार के इस क़दम का मक़सद मीडिया संस्थानों को ख़ामोश करना है। यह स्पष्ट है कि ग़ाज़ा में इजरायल, अंतर्राष्ट्रीय मीडिया दफ़्तरों पर निशाना साध कर क्षेत्र में इजरायली हमलों की रिपोर्टिंग को प्रभावित करना चाहता था ताकि इज़रायल की ख़ूनी और बर्बरता से भरे अभियानों की सही तस्वीर दुनिया के सामने नहीं आ सके और वो अपने आपको पीड़ित साबित कर सकें, लेकिन ग़ाज़ा क्षेत्र में कार्यरत मीडियाकर्मियों की कर्तव्यनिष्ठा ने इजरायली इरादों पर पानी फेर दिया और जिस तरीक़े से बड़े पैमाने पर लोगों ने सोशल मीडिया मंचों पर इजरायली बर्बरता की तस्वीरें और जानकारियां अपलोड करना निरंतर जारी रखा उसने इजरायली प्रशासन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नंगा कर दिया।

इस युद्ध के कवरेज़ को लेकर मीडिया संस्थानों पर भी कई गंभीर सवाल खड़े किए गए हैं, इस युद्ध में विशेषकर वेस्टर्न मीडिया का दोहरे मापदंडों पर आधारित पक्षपाती चरित्र पूरी तरह से बेनक़ाब हो गया। अधिकतर वेस्टर्न मीडिया ने इजरायल के मानवाधिकारों की भरपूर वकालत की और उनके हिंसक अभियानों को भरपूर समर्थन देते हुए उसे आत्म-रक्षा के लिए अनिवार्य पहल बताया लेकिन इजरायल ने जिस तरीक़े से युद्ध को भड़काया और ग़ाज़ा पट्टी में जिस तरीक़े से उत्पात मचाते हुए बड़े पैमाने पर जान-माल का नुक़सान पहुंचाया उसे न तो ठीक तरीक़े से कवरेज किया गया और न ही इजरायल के युद्ध अपराध की भूमिका को उजागर किया गया। यह स्पष्ट है कि इजरायल अपनी आक्रामकता के आधार पर बड़े भू-भाग पर अनाधिकृत क़ब्ज़ा जमाते हुए फ़िलिस्तीनियों को संकरी पट्टी पर धकेल दिया, लेकिन वेस्टर्न मीडिया को यह खुल्लम-खुल्ला घुसपैठ नहीं दिखाई दिया और फ़िलिस्तीनियों ने इसे लेकर अपनी शक्ति के अनुसार जो थोड़ा-मोड़ा संघर्ष किया उस आधार पर उलटा उन्हें ही चरमपंथी और आतंकवादी घोषित

Welcome To
GREEN CITY BUILDERS



Green City Builders is a Nagpur entity the centrally located city in India, with connectivity to the four corners of the country. Zakir Khan's thrust lies with the fact that since much before the present development and advancement taking shape in Nagpur ; what with the Multimodal International Hub at Nagpur (MIHAN) Special Economic Zone (SEZ) ;of almost the size of Nagpur itself, Expansion and standardization of the existing Airport to International quality and performance, the onset of the famous "SAHARA" groups city home project, he could sense almost the same transformation in the fortunes of the city through his inquisitive intelligence and a will to usher in the same values of advancement through his Green City Builders, for his beloved orange city of Nagpur.

OFFICE ADDRESS
21, "Aman's Glory", Jafar Nagar, Main Road, Nagpur - 440013.
Ph: 0712-2587860, 2587862
Email: business@greencitybuildcons.com



कर दिया। यह अत्यंत खेदजनक स्थिति रही है कि पीड़ितों को ही अपराधी बनाने में अंतर्राष्ट्रीय मीडिया का बड़ा हिस्सा कोई कोर-क़सर बाक़ी नहीं रखा और जिन पत्रकारों ने साहस दिखाते हुए मीडिया के आपराधिक चरित्र पर सवाल खड़े किए उन्हें सेवा से तत्काल बाहर कर दिया गया।

फ़िलिस्तीनियों और इजरायलियों के बीच ज़ारी संघर्ष का प्रभाव केवल क्षेत्रीय इलाक़ों तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि यह संघर्ष एक गंभीर वैश्विक मुद्दे में तब्दील होता गया, जिसके चलते वैश्विक समुदाय कई धड़ों में परिवर्तित होते हुए दिखा। एक तरफ़ जहां एक गिरोह इजरायली आक्रमणों और फ़िलिस्तीनियों पर ढाए गए ज़ुल्मों-सितम को आत्म-रक्षा का लबादा ओढ़ाकर उसे जायज़ क़रार देने में पूरी शिद्दत के साथ जुटा रहा, वहीं दूसरा गिरोह फ़िलिस्तीनियों के जायज़ हक़ों और मानवाधिकारों के लिए ज़ुबानी कोशिशों के ज़रिए व्यापक स्तर पर समर्थन जुटाने का प्रयास किया। इस दफे के संघर्ष में सबसे अहम पहलू यह भी था कि वैश्विक स्तर पर इजरायली पक्षों को अपेक्षित भरपूर समर्थन नहीं मिला। बैंजामिन नेतन्याहू ने संकट में समर्थन देने के लिए लगभग पच्चीस देशों का शुक्रिया और आभार व्यक्त किया, लेकिन इन पच्चीस देशों के ताल्लुक़ से एक अहम सच्चाई यह भी है कि इन देशों में भी फ़िलिस्तीनियों के समर्थन में भी लोगों की बड़ी तादाद ने कई प्रदर्शन किए हैं। बीते दशक में इजरायल-भारत के संबंधों में आईं नज़दीकियों के आधार पर इजरायल इसे लेकर बहुत आश्वस्त था की विषम परिस्थितियों में भी भारत का समर्थन उसे मिलेगा, लेकिन भारत ने 'टू नेशन' के समाधान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता ज़ाहिर कर इजरायली अभियान को क़रारा झटका दिया है।

इसराईल के अस्तित्व में आने के साथ ही अमेरिका उसका सबसे बड़ा रणनीतिक साझीदार रहा और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अमेरिका ने सबसे अधिक आर्थिक सहायता इसराईल को दी है। पूर्व में ओबामा सरकार ने साल 2016 में 38 बिलियन डॉलर की सहायता के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए थे और इसी अनुबंध के तहत वर्ष 2020 में अमेरिका ने 3.8 बिलियन डॉलर आर्थिक मदद के तौर पर इसराईल को दी। अमेरिका ने पिछले वर्ष दूसरे देशों से इजरायल आने वाले यहूदियों के पुनर्वास के लिए भी पांच मिलियन डॉलर की राशि उपलब्ध कराई। इसराईल सेना को उन्नत बनाने में भी अमेरिका बड़े पैमाने पर मदद देता रहा है। अमेरिकी से मिलने वाली आर्थिक मदद का बड़ा हिस्सा इजरायल सैन्य तकनीक और साज़ो-सामान पर ख़र्च करता है। अमेरिका से कुछ समय पूर्व इजरायल ने 50 उन्नत एफ-35 विमानों की ख़रीद की है, एक विमान की क़ीमत 100 मिलियन डॉलर है। पिछले वर्ष इजरायल ने आठ 'केसी-46ए बोइंग' 'पीगेसस' विमान ख़रीदे, जिनकी क़ीमत लगभग 2.4 बिलियन डॉलर बताई गई है। वर्ष 2020 में इसराईल को दिए गए 3.8 बिलियन डॉलर में से 500 मिलियन डॉलर मिज़ाइल डिफेंस के लिए थे, इसमें आयरन डोम को उन्नत बनाने के लिए निवेश शामिल था, जबकि अमेरिका वर्ष 2011 से इज़रायल के आयरन डोम

में 1.6 बिलियन डॉलर का निवेश कर चुका है। इज़रायल ने अमेरिका के साथ सैन्य टेक्नॉलोजी पर साथ काम करने के लिए भी लाखों मिलियन डॉलर ख़र्च कर रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इजरायल को मिलने वाली अमेरिकी शह पश्चिमी एशिया में असंतुलन पैदा करने के साथ उसके सुलगते रहने का सबसे बड़ा कारण रहा है।

इजरायल को दी जाने वाली सहायता के पीछे अमेरिका यह तर्क देता है कि वह 1948 में एक अलग यहूदी देश बनाने के लिए मदद का भरोसा दिया था, लेकिन यह बात गले नहीं उतरती है कि केवल एक देश को स्थापित करने के लिए लंबे समय से आर्थिक और तकनीकी तौर पर मदद की जाती रहें और मदद की बुनियाद पर वो देश इलाक़े में उत्पात मचाता रहे। इस मदद के पीछे अंतर्राष्ट्रीय राजनीति विश्लेषक दो मज़बूत तर्क देते हैं, 'एक यह है कि अमेरिका में यहूदी लॉबी बहुत मज़बूत है और इनका रिपब्लिकन और डेमोक्रेट्स दोनों दलों में मज़बूत दख़ल है, इस आधार पर यहूदी लॉबी इजरायल के लिए आर्थिक और तकनीकी तौर पर बड़ा सहयोग जुटा लेते हैं', वहीं दूसरा तर्क यह है कि 'पश्चिमी एशिया में अमेरिकी कूटनीतिज्ञ इज़रायल को महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में देखते रहे हैं। पश्चिमी एशिया में होने वाले उथल-पुथल में इजरायल का बड़ा हाथ रहा है जो सीधे तौर पर पश्चिमी एशियाई देशों के विकास पर अंकुश लगाने वाला, उनके बहुपक्षीय बढ़त पर लगाम लगाने का प्रयास और अमेरिकी रक्षा उत्पादों की बिक्री बढ़ाने के साथ अमेरिकी वर्चस्व को मज़बूत बनाता है। डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन, दोनों ही पार्टी के राष्ट्रपतियों के कार्यकाल के दौरान इजरायली इलाक़े को महफ़ूज़ रखने की कोशिशें अमेरिकी विदेश नीति का हिस्सा रही है। वर्ष 2020 के चुनाव के दौरान डेमोक्रेटिक पार्टी ने यह एलान किया था कि इसराईल को "लोहे की तरह सपोर्ट" देते रहेंगे, लेकिन अब कुछ सिनेटरों के रुख़ में बदलाव आया है और पार्टी के वाम धड़े के लोग अमेरिका की इजरायल को लगातार जारी रहने वाली मदद पर सवाल उठाए हैं। अमेरिका से इज़रायल के बीच पूर्व में तय 735 मिलियन डॉलर के सैन्य उपकरणों की बिक्री पर रोक लगाने के लिए सीनेटर सैंडर्स और कुछ पार्टी के लोगों द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। अमेरिकी संसद में युवा लिबरल महिलाओं का एक गुट 'द स्कवैड' इजरायली ज़ुल्मों-सितम की तीखी आलोचना करने को लेकर सुर्खियों में रहा है।

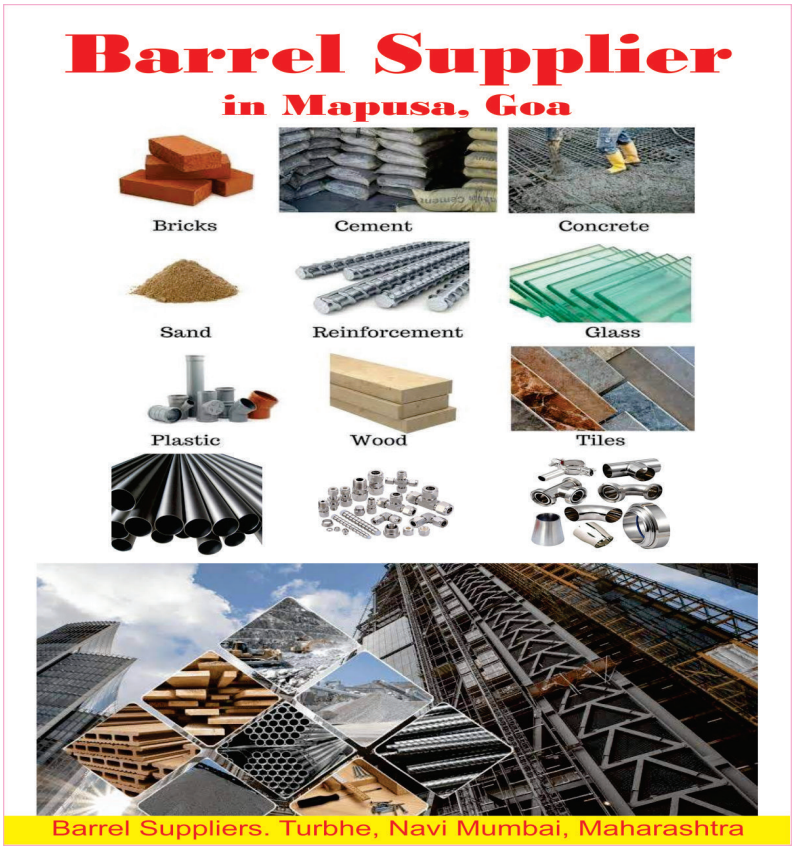
अमेरिका हमेशा वैश्विक राजनीति में भी इजरायल को भरपूर समर्थन देता रहा है। अमेरिका ने इजरायली ज़ुल्मों-सितम को आत्म-रक्षा क़रार दिया और इजरायलियों के मानवाधिकार की सुरक्षा को लेकर भरपूर समर्थन दिया, लेकिन इजरायली बर्बरतापूर्ण कार्रवाई से पीड़ितों को ही आतंकवादी घोषित करता रहा है और फ़िलिस्तीनियों के मानवाधिकारों को लेकर आंखें मूंदे रखा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पश्चिमी एशिया में अमेरिकी रणनीति पूरी तरह से दिशाहीन हो चुकी है, बाइडेन हाल के युद्ध में इजरायल को खुले रूप से समर्थन देकर बड़ी ग़लती कर रहे हैं और वहीं पूर्व में तात्कालिक अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यरुशलम को इजरायल की राजधानी के रूप में मान्यता देकर बड़ी



ग़लती कर चुके हैं। युद्धविराम के पश्चात् अमेरिकी विदेश मंत्री एंटोनी ब्लिंकन का पश्चिमी एशियाई देशों का दौरा इस बात का प्रमाण है कि युद्ध के दौरान पश्चिमी एशिया में अमेरिकी हितों को भी ख़ासा नुक़सान हुआ है और अमेरिकी विश्वसनीयता पहले के मुक़ाबले कम हुई है। एंटोनी ब्लिंकन के दौरे का मुख्य उद्देश्य अमेरिका का फ़िलिस्तीनियों के साथ बिगड़े रिश्तों को सुधारने का रहा है, इसमें फ़िलिस्तीन को आर्थिक मदद के ज़रिए दोबारा खड़ा करने के साथ यरुशलम में उस वाणिज्य दूतावास को फिर से खोलने का वादा भी किया गया जिसे ट्रंप प्रशासन ने बंद कर दिया था, लेकिन इन क़वायदों के ज़रिए क्या अपनी साख को लेकर हुए नुक़सान की भरपाई अमेरिका कर पाएगा, फ़िलहाल यह बड़ा सवाल है। पश्चिमी एशिया में बढ़ती चीन की दिलचस्पी अमेरिका की नींद उड़ाए हुए है। चीन ने अमेरिका पर तंज़ कसते हुए कहा कि अमेरिका को उइगर मुसलमानों का मानवाधिकारों की बहुत चिंता है, लेकिन फ़िलिस्तीनियों के मानवाधिकारों को लेकर अमेरिका चुप्पी साध रखी है जो उसके दोहरे मापदंड का परिचायक है।

इस युद्ध में इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) की भूमिका को देखा जाए तो उसकी पूरी क़वायद महज़ इजरायली आक्रमण की निंदा करने तक सीमित रहते हुए बेजान और नीरस दिखाई दीं। हालांकि पाकिस्तान और तुर्की ने इजरायली दुस्साहस पर काफ़ी मुखर प्रतिक्रिया देते हुए फ़िलिस्तीनियों के हितों को लेकर हर संभव विकल्प तलाशने पर ज़ोर दिया। वहीं फ़िलिस्तीन के विदेश मंत्री ने कुछ समय पूर्व इजरायल से संबंध क़ायम करने वाले मुस्लिम देशों को जमकर लताड़ लगाई, फ़िलिस्तीन मंत्री की बातों के दो महत्वपूर्ण पहलू रहे हैं, पहला 'हमें राहत के तौर पर माली मदद नहीं चाहिए' वहीं दूसरा 'मस्जिद अल-अक़्सा की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ फ़िलिस्तीनियों की नहीं है, बल्कि दुनिया के सभी मुसलमानों की है, पूरी बातें अमेरिकी धुन में थिरकने वाले अरब देशों के मुंह पर क़रारा तमाचा था। संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, मोरक्को और सूडान, इन सभी देशों ने इसराईल के साथ 'अब्राहम एकॉर्ड्स' के नाम से जाने जाने वाले समझौतों पर दस्तख़त किए हैं, लेकिन मौजूदा फ़िलिस्तीनी संकट को इस समझौते के 'लिटमस टेस्ट' के रूप में देखा जा रहा है। ओआईसी में सऊदी अरब का वर्चस्व रहा है, लेकिन युद्ध को लेकर सऊदी अरब का रुख़ फ़िलिस्तीनियों की मदद और उनके अधिकारों की रक्षा करने में कम बल्कि अपने बादशाहत को स्थिर रखने और विवादों से दूर रहने वाला अधिक दिखा। जबकि 1967 में 'सिक्स डे वार' के बाद 25 सितम्बर 1969 को ओआईसी की स्थापना का मुख्य उद्देश्य फ़िलिस्तीनियों के अधिकारों की रक्षा से जुड़ा रहा, लेकिन 57 देशों के समूह के बीच आपसी कशमकश ने ओआईसी के उद्देश्य को पलीता लगा दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ के बाद ओआईसी दुनिया का सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, लेकिन पश्चिमी एशियाई देशों में उभरते गंभीर संकटों के दौरान ओआईसी की भूमिका महज़ तमाशबीन से अधिक कुछ भी नहीं रही और इजरायली साज़िशों से उबरने में बुरी तरह से नाकाम रही है।

इजरायल ने जिस आक्रामकता और अमानवीय तेवरों के साथ युद्ध का आरंभ करते हुए इस संग्राम को निर्णायक स्तर पर ले जाने का इरादा ज़ाहिर किया था वो मंशा बमुश्किल दस दिनों तक भी



टिक नहीं सकी और उसे बग़ैर किसी शर्तों के एकतरफ़ा युद्धविराम की घोषणा करनी पड़ गई। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस बार इसराईल को सभी मोर्चों पर सशक्त प्रतिरोधों का सामना करना पड़ा जिसका उसे गुमान भी नहीं था। इजरायली सरकार न केवल ग़ाज़ा और वेस्ट बैंक, बल्कि इसराईल के भीतर भी भड़कते हिंसक संघर्ष के पहलुओं को समय पूर्व भांपने में विफल रही, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था कि जब एक ही समय पर विभिन्न क्षेत्रों में हिंसात्मक संघर्ष की घटनाएं तेज़ी से भड़कना शुरू हुआ हो। रमज़ान के दौरान अल-अक़्सा मस्जिद में इसराईली सुरक्षाकर्मियों ने जिस तरह फ़िलिस्तीनी महिला, पुरुषों और बच्चों को निशाना बनाया, उस कार्यवाही ने इसराईल में रहने वाली अल्पसंख्यक अरब आबादी के साथ पूरी दुनिया में बड़ी तादाद में लोगों को ख़ासा क्रोधित कर दिया, जिसके कारण इसराईल को आंतरिक स्तर और लगभग सभी देशों में तनावपूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ा। युद्ध-विराम के संदर्भ में मिस्र के प्रयासों का बहुत ज़िक्र है, लेकिन यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मिस्र की यह क़वायद फ़िलिस्तीनियों की सहायता पर केन्द्रित न होकर मिस्र की सरकार ने देश में अपने वर्चस्व को ध्यान में रखकर अधिक किया है, क्योंकि अभी भी 'अरब स्पिरिंग' की आग पूरी तरह से ठंडी नहीं हुई है और मौजूदा मिस्र की सरकार किसी संभावित उलट-फेर और अपने भविष्य को लेकर ख़ासा चिंतित हैं। जबकि फ़िलिस्तीन मिस्र का पड़ोसी देश है जिसकी सीमा उससे जुड़ती है और इस आधार पर फ़िलिस्तीन को मज़बूत बनाने में मिस्र निर्णायक भूमिका निभा सकता है, मुर्सी की हुकूमत के दौरान फ़िलिस्तीनियों को मिस्र का बड़ा समर्थन मिला, लेकिन मौजूदा अल-सीसी की सरकार में कोई मज़बूत लगाव नहीं दिखा।

तुर्की और पाकिस्तान का कड़ा प्रतिरोध भी युद्ध-विराम में एक सशक्त पहलू है। इजरायली अभियान विशेषकर मस्जिद अल-अक़्सा में इजरायली बर्बरतापूर्ण कार्रवाई को लेकर तुर्की ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि मस्जिद अल-अक़्सा की तरफ़ बढ़ने वाले हाथों को तोड़ देंगे। पाकिस्तान ने जहां संयुक्त राष्ट्र संघ के आपातकालीन बैठक में फ़िलिस्तीनियों के मानवाधिकारों को लेकर मज़बूत गुहार लगाई, वहीं तुर्की ने इजरायल के विरुद्ध अमेरिका विरोधी रूस से लेकर सभी मुस्लिम देशों को लामबंद करने का गंभीर प्रयास किया। चीन की अमेरिका को झिड़की और फ़िलिस्तीन-इजरायल के मध्य जारी गतिरोध को लेकर मध्यस्थता की पेशकश अमेरिका की पश्चिमी एशिया में चूले हिला दिया और अमेरिका को इजरायल पर युद्ध-विराम को लेकर दबाव बनाने पर विवश कर दिया।

इस सीमित समय के युद्ध में इजरायल को आर्थिक तौर पर भारी नुक़सान उठाने पड़े हैं, एक रिपोर्ट के मुताबिक़ युद्ध के दौरान इजरायल के औद्योगिक इकाइयों में कामगारों की छुट्टी के चलते उत्पादन लगभग पूरी तरह से ठप्प पड़ गया। हमास द्वारा दाग़े जाने वाले रॉकेट को इंटरसेप्ट करने में इजरायल को बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ी, एक रॉकेट को रोकने का ख़र्चा लगभग एक करोड़ था। इजरायल के सामने लंबे अरसे से सिर्फ़ हमास प्रतिरोध रहा है। इजरायली सैन्य क्षमता के आगे हमास की चुनौती बहुत ही मामूली रही है जिसकी इजरायली ताक़त से तुलना भी एक बेवक़ूफ़ी भरा पहल माना जा सकता है, लेकिन हमास ने इसराईल के ऊपर 4,000 से अधिक रॉकेट दाग़कर यह संदेश दुनिया को देने में कामयाब रहा की सीमित संसाधनों और सीमाओं पर इसराईल और मिस्र की कड़ी नाकाबंदी के बावजूद भी वह अपने प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा रहा है और इजरायल को कड़ी टक्कर देने का माद्दा रखता है। रॉयटर्स के मुताबिक़, 2014 में इसराईल और ग़ाज़ा के बीच हिंसा के बाद हमास और उसके सहयोगी समूह 'फ़िलिस्तीनी इस्लामिक जिहाद' ने अपने रॉकेटों की क्षमता और तादाद को काफ़ी बढ़ाया है।

फ़िलिस्तीन और इजरायल के बीच युद्ध-विराम भले ही क़ायम हो गया है, लेकिन इसकी वैधता और दीर्घकालिक उपाय होने पर गंभीर सवाल है। हमास ने साफ़तौर से कह दिया है कि उसके हाथ अभी भी ट्रिगर से नहीं हटे हैं, जिसका सीधा आशय यही है कि युद्ध-विराम की पूरी निर्भरता इजरायली रुख़ पर होगी। स्पष्ट है कि इजरायल की विश्वसनियता हमेशा संदेह में रही है। इस बारे में पूर्व प्रधानमंत्री नेहरू ने आइंस्टाइन के एक पत्र के जवाब में लिखा था, "मेरे मन में यहूदियों को लेकर व्यापक सहानुभूति है, मेरे मन में अरबियों को लेकर भी सहानुभूति कम नहीं है, मैं जानता हूं कि यहूदियों ने फ़िलिस्तीन में शानदार काम किया है, लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में बड़ा योगदान दिया है, लेकिन एक सवाल मुझे हमेशा परेशान करता है, इतना होने के बावजूद अरब में यहूदियों के प्रति भरोसा क्यों नहीं बन पाया?" इसमें कोई संदेह नहीं है कि इजरायल कभी भी भरोसे का पात्र नहीं रहा है और लगातार साज़िशों के आधार पर इसकी छवि आपराधिक बनी रही है। ■■

कविता



कविता
कृष्णपल्लवी



ग़ाज़ा के एक बच्चे की कविता

बाबा! मैं दौड़ नहीं पा रहा हूं।
ख़ून सनी मिट्टी से लथपथ
मेरे जूते बहुत भारी हो गए हैं।
मेरी आंखें अंधी होती जा रही हैं
आसमान से बरसती आग की चकाचौंध से।
बाबा! मेरे हाथ अभी पत्थर
बहुत दूर तक नहीं फेंक पाते
और मेरे पंख भी अभी बहुत छोटे हैं।

बाबा! गलियों में बिखरे मलबे के बीच
छुपम-छुपाई खेलते
कहां चले गए मेरे तीनों भाई?
और वे तीन छोटे-छोटे ताबूत उठाए
दोस्तों और पड़ोसियों के साथ तुम कहां गए थे?
मैं डर गया था बाबा कि तुम् हें
पकड़ लिया गया होगा
और कहीं किसी गुमनाम अंधेरी जगह में
बन् द कर दिया गया होगा
जैसा हुआ अहमद, माजिद और सफ़ी के
अब् बाओके साथ।
मैं डर गया था बाबा कि
मुझे तुम् हारे बिना ही जीना पड़ेगा
जैसे मैं जीता हूं अम् मी के बिना
उनके दुपट्टे के दूध सने साये और लोरियों की
यादों के साथ।

मैं नहीं जानता बाबा कि वे लोग
क् यों जला देते हैं जैतून के बाग़ों को,
नहीं जानता कि हमारी बस्तियों का मलबा
हटाया क् यों नहीं गया अब तक
और नए घर बनाए क् यों नहीं गए अब तक!
बाबा! इस बहुत बड़ी दुनिया में
बहुत सारे बच् चे होंगे हमारे ही जैसे
और उनके भी वालिदैन होंगे।
जो उन् हें ढेरों प्यार देते होंगे।
बाबा! क् या कभी वे हमारे बारे में भी सोचतेहोंगे?

बाबा! मैं समन् दर किनारे जा रहा हूं
फुटबाल खेलने।
अगर मुझे बहुत देर हो जाए
तो तुम लेने ज़रूर आ जाना।
तुम मुझे गोद में उठाकर लाना
और एक बड़े से ताबूत में सुलाना
ताकि मैं उसमें बड़ा होता रहूं।
तुम मुझे अमन-चैन के दिनों का
एक पुरसुकून नग़मा सुनाना,
जैतून के एक पौधे को दरख् त बनते
देखते रहना
और धरती की गोद में
मेरे बड़े होने का इन्तज़ार करना।
(यूनाइटिंग वर्किंग क्लास.ब्लॉगस्पॉट.कॉम)

व्यक्तित्व विकास



डॉ० शकील अलीग

ख़ुशमिज़ाजी और सेहत

डील कारनेगी ने अपनी किताब 'फाइव मीनट बायोग्रेफी' के टाइटल पेज पर लिखा है, ज़िन्दगी में कामयाबी हासिल करने का सबसे पहला उसूल मीठी बोली और विनम्रता है। इस उसूल में पत्थर से पत्थर दिल को मोम करने की बेइन्तिहा ताक़त पाई जाती है। आपकी ज़बान से अदा होने वाले मीठे बोल और आपके चेहरे पर नुमायां होने वाली मुस्कराहट बदतरीन दुश्मन को भी दोस्त बना देने वाली अचूक औषधि है। लेखक ने अपनी किताब में न्यूयार्क के एक क्लब एक्सचेंज के मेम्बर का एक ख़त शामिल किया है।

उसने लिखा है, ''मेरी शादी को पूरे अठारह साल गुज़र चुके हैं इन अठारह सालों में मेरी ज़िन्दगी का कोई लम्हा ऐसा नहीं गुज़रा जब अपनी बीवी को देखकर मेरे होंठों पर मुस्कराहट नज़र आई हो या मैंने ख़ुशमिज़ाजी के साथ उससे कोई बात की हो। पूरे शहर में ख़ुशमिज़ाज और रुखे व्यक्ति की हैसियत से मैं परिचित था। मैंने आपके बताने के अनुसार अमल करते हुए मुस्कराना शुरू किया और इरादा कर लिया कि इसकी शुरुआत मैं अपने घर से करूंगा। आज मैं अपनी मासूम बीवी से मुस्कराकर बात करूंगा और पिछली बेरंग और बेमज़ा ज़िन्दगी को ख़ुशदिली और हास्यपूर्ण बातचीत से ख़ूबसूरत बना दूंगा। जब हम ज़िन्दगी में पहली बार हंसते-मुस्कराते नाश्ते की मेज पर पहुंचे तो मैं इस वक़्त अपनी बीवी का हाल बयान नहीं कर सकता। वह मेरे इस परिवर्तन पर हैरान व परेशान दिखाई दे रही थी। अविश्वास के लक्षण उसके चेहरे से ज़ाहिर हो रहे थे। जब मैंने उसे बताया कि अब मैं ऐसी ही ज़िन्दगी अपनाने वाला हूं तो भावनाओं के ज्वार से उसकी आंखें भर आई।

आज दो महीने होने वाले हैं। मैं अपनी मुस्कराने की आदत पर क़ायम हूं। मेरे इस परिवर्तन से ऐसा लगता है जैसे मेरे घर में बहार आ गई है। अब मेरे घर में चारों तरफ़ ख़ुशियां ही ख़ुशियां हैं। अब तो मेरी ये हालत है कि ड्राइवर को मैं हैलो करता हूं, लिफ्ट पर काम करने वाले लड़के को सलाम करता हूं। कैशियर से फुटकर मांगते हुए मुस्कराता हूं। यहां तक कि क्लब की मीटिंग में जब मैं सभी मेम्बरों से मुस्करा-मुस्करा कर बात करता हूं, तो मुझे उनके चेहरे पर अपनी अहमियत का अंदाज़ा होता है और आत्मविश्वास की लहरें मेरे अन्तर में तैर जाती हैं।'' ख़त काफ़ी लंबा है

आज दो महीने होने वाले हैं। मैं अपनी मुस्कराने की आदत पर क़ायम हूं। मेरे इस परिवर्तन से ऐसा लगता है जैसे मेरे घर में बहार आ गई है। अब मेरे घर में चारों तरफ़ ख़ुशियां ही ख़ुशियां हैं।

इसमें ख़त लिखने वाले ने ज़िन्दगी के सभी क्षेत्रों में इस ख़ुशमिज़ाजी और मुस्कराहट से पड़ने वाले प्रभावों को बयान किया है।

सच्चाई भी यही है कि ख़ुशमिज़ाजी, ज़िन्दादिली, मुस्कराहट, विनम्रता वो गुण हैं जिससे व्यक्तित्व के अन्दर निखार आता है, चुम्बकीय खिंचाव पैदा होता है। मुस्कराहट न सिर्फ़ मुस्कराने वाले को फ़ायदा पहुंचाती है, बल्कि सामने वाला भी मुस्करा उठता है उसके अन्दर भी ख़ुशी की एक लहर दौड़ जाती है। मुस्कराहट और ख़ुशमिज़ाजी से चेहरा खिल उठता है, ज़िन्दगी में नूर आ जाता है। मुस्कराहट दिल की बगिया को खिला देती है, महफ़िल में रंग पैदा करती है, रूह को ताज़गी प्रदान करती है। व्यक्तित्व को निखारती है। उसके अन्दर ऐसी कशिश पैदा करती है कि हर मिलने वाला प्रभावित होकर रहता है। दूर वाला क़रीब हो जाता है और क़रीब वाला अक़ीदत व मुहब्बत से भर जाता है। मुहब्बत में ख़र्च कम और हासिल ज़्यादा होता है। मुस्कराहट ऐसा जादू है जो सर चढ़कर बोलता है। एक मनोवैज्ञानिक का कहना है, ''मुस्कराहट ऐसा वार है जिससे कोई बच नहीं सकता।''

कामयाब ज़िन्दगी, कामयाब व्यापार, कामयाब संबंधों का राज मुस्कराहट में है। मैं इससे आगे बढ़कर कहता हूं कि कामयाब दावत में भी मुस्कराहट का अहम रोल है।

मुस्कराहट हुज़ूर (सल्ल०) के व्यक्तित्व का हिस्सा थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने रसूल (सल्ल०) से ज़्यादा किसी और को मुस्कराते हुए नहीं देखा। ख़ुशमिज़ाजी और मुस्कराहट हुज़ूर (सल्ल०) के व्यक्तित्व का हिस्सा थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने रसूल (सल्ल०) से ज़्यादा किसी और को मुस्कराते हुए नहीं देखा। ख़ुशमिज़ाजी और मुस्कराहट हुज़ूर (सल्ल०) की सुन्नत है। आप (सल्ल०) ख़ुशमिज़ाज और विनोदी स्वभाव के थे।

सच्चाई भी यही है कि ख़ुशमिज़ाजी, ज़िन्दादिली, मुस्कराहट, विनम्रता वो गुण हैं जिससे व्यक्तित्व के अन्दर निखार आता है, चुम्बकीय खिंचाव पैदा होता है। मुस्कराहट न सिर्फ़ मुस्कराने वाले को फ़ायदा पहुंचाती है, बल्कि सामने वाला भी मुस्करा उठता है उसके अन्दर भी ख़ुशी की एक लहर दौड़ जाती है। मुस्कराहट और ख़ुशमिज़ाजी से चेहरा खिल उठता है, ज़िन्दगी में नूर आ जाता है।

''कोई बुढ़िया जन्नत में नहीं जाएगी'' और ''हर ऊंट किसी ऊंटनी का बच्चा ही होता है।'' जैसे मज़ाक़ इस बात पर गवाह हैं। हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ''किसी भी नेकी को छोटा न समझो चाहे वो तुम्हारे अपने भाई से खिले हुए चेहरे के साथ मुलाक़ात ही क्यों न हो।'' यानी कि विनम्रतापूर्वक मिलना एक प्रकार की नेकी है जिस पर अल्लाह के यहां प्रतिदान है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि, ''अपने भाई के सामने मुस्कराना सदक़ा है।'' ये हदीस इस्लाम के प्राकृतिक दीन होने की पुष्टि करती है। हक़ीक़त ये है कि जो भी इस्लामी उसूलों पर चलेगा उसका व्यक्तित्व बुलंदियों को छुएगा और वह नफ़्सानी बीमारियों से कोसों दूर रहेगा।

विनोदी स्वभाव और ख़ुशमिज़ाजी इन्सान के स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। हवा, पानी और भोजन की तरह विभिन्न भावनाएं और विचार भी इन्सानी जिस्म को प्रभावित करते हैं। मायूसी, चिंता और परेशानी, नफ़रत और ग़ुस्सा, ईर्ष्या व जलन ऐसी भावनाएं हैं जिनसे सेहत को ख़तरा होता है। आज जबकि साइंस व टेक्नॉलोजी काफ़ी ऊंचाई पर पहुंच चुकी है इन्सान शारीरिक व मानसिक उलझनों का शिकार है।

पश्चिमी देशों में जगह-जगह बीमारियों के हॉस्पिटल क़ायम हैं। ख़ुद हिन्दुस्तान में भी अब इसकी अहमियत बढ़ती जा रही है। हर बड़े हॉस्पिटल में दिमाग़ी बीमारियों का विभाग अलग से क़ायम है। विचार और पवित्र भावनाएं रखता हो, वह ख़ुशमिज़ाजी और विशाल हृदयता के गुणों से संपन्न हो, वह मुस्कराना और दूसरों को मुस्कराने पर मजबूर कर देना जानता हो, तो इस तरह की बीमारियां उसे नहीं हो सकती हैं।

आजकल मालो-दौलत की भूख, नकारात्मक विचार और तनाव ने इन्सान को दिल की बीमारियों, पेट का अल्सर और हाई ब्लड प्रेशर जैसी बीमारियों

का तोहफ़ा दिया है। विशेषज्ञों की राय है कि अच्छी सेहत के लिए मुस्कराता चेहरा, पुरसकून दिमाग़ और पवित्र भावनाएं ज़रूरी हैं, क्योंकि दिमाग़ी उलझनों और गुमसुम चेहरे के साथ गतिशीलता, चुस्ती-फुर्ती पाचन तंत्र का ठीक होना और सभी अंगों का स्वस्थ होना असंभव है।

ख़ुशमिज़ाजी और दिल्लगी इन्सानी ज़िन्दगी के लिए अनिवार्य है। हमारी तहरीक के अन्दर भी इस पर बहुत कुछ कहा गया है। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी ने अपनी किताब 'संगहा-ए-मील' में एक स्थान पर लिखा है–

''नौजवानों की महफ़िलें ख़ुश्क नहीं रह सकतीं और न ही रहना चाहिए। मुस्कुराहटें और क़हक़हें इन्सानी ज़िन्दगी की ज़रूरतों में से हैं और इन्सानों से उनकी मुस्कुराहटें और हंसी छीन ली जाए तो शायद वह ज़िन्दा न रह सकें। स्तरीय हास्य-विनोद इन्सानी व्यक्तित्व को भी आकर्षक बनाता है और महफ़िलों और मजलिसों में भी आकर्षण और खिंचाव पैदा करता है। अगर हम चाहते हैं कि लोग हमारी मजलिसों में दिलचस्पी लें और हमारी महफ़िलों में शामिल हों तो इन महफ़िलों को हास्य-विनोद की नमकीनी से जायक़ेदार बनाना हमारे लिए अनिवार्य है। यही वजह है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सीरत में भी हमें चुटकुलों और विनोदपूर्ण वाक्यों का वर्णन मिलता है और सभी समाज सुधारकों एवं महान इस्लामी हस्तियों के जीवनी में हम उनके हास्य एवं विनोद के वर्णन पढ़ते हैं। यहां तक कि इस्लामी लेखकों की रचनाओं में भी हास्यपूर्ण इशारों की मिठास मिलती है। इस्लाम का स्वभाव भी 'रुखेपन' का नहीं....।''

दूसरे शब्दों में ख़ुशमिज़ाजी, मुस्कुराहट, दिल्लगी केवल व्यक्तिगत ख़ूबियां नहीं हैं, बल्कि ये एक समाजी ज़रूरत है, मजलिसों की जान है और ये एकतरफ़ा मामला नहीं है, बल्कि एक विनोदी एवं ख़ुशमिज़ाज व्यक्ति सामने वाले व्यक्ति को भी ख़ुशी और आनन्द से भर देता है और ग़मगीन व्यक्ति की उदासी को समाप्त कर देता है यही वजह है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने इसको सदक़ा कहा है। जिस तरह एक ग़रीब शख़्स को सदक़ा देकर उसकी मदद की जाती है उसी प्रकार मुस्कुराहट देकर भी उदास दिल को ख़ुशी प्रदान की जाती है।

मतलब ये कि हमारे लिए मुस्कुराना और ख़ुशमिज़ाजी को अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बनाना ज़रूरी है, क्योंकि इससे वीरान दिल में रौनक़ पैदा हो जाती है, बेमज़ा ज़िन्दगी में बहार आ जाती है। व्यक्तित्व के अन्दर निखार आता है। संबंधों में गर्मजोशी और मज़बूती पैदा होती है। घुटे-घुटे माहौल में चहल-पहल और रंग पैदा होता है। आफ़िस में काम करते हुए थकान का एहसास कम और ताक़त बढ़ जाती है। सेहत पर सकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। मानसिक तनाव और नसों की सख़्ती कम हो जाती है। चेहरे पर एक ख़ास क़िस्म की चमक पैदा हो जाती है। व्यापार में कामयाबी मिलती है। नेतृत्व में जान पैदा होती है और इसलिए भी कि ये हुज़ूर (सल्ल०) की सुन्नत है, अल्लाह की रज़ा हासिल करने का साधन है, नेकी है, सदक़ा है।

ऐ दोस्त मुस्कुरा कि तबियत उदास है।



व्यंग्य



बिपिन कुमार शर्मा

ऑक्सीजन जिहाद

इन मुसलमानों ने तो नाक में दम करके रखा है!

यूपीएससी जिहाद के बाद अब ऑक्सीजन जिहाद कर रहे हैं! ऐसे माहौल में इनसे इतना भी नहीं हो पा रहा कि रमज़ान में सड़क जाम करके नमाज़ पढ़ें! कोरोना से भगवान बचाएगा कि ऑक्सीजन? भूखे-प्यासे इस सुलगते मौसम में ऑक्सीजन सिलेंडर पहुंचाते फिर रहे हैं! वो भी हिंदू मरीज़ों के लिए?

आप लोग अपना देखो भाई, हिंदू तो अब जाग ही चुका है। और जब जाग गया है तो देर-सबेर ऑक्सीजन का भी जुगाड़ कर लेगा। और अगर ऑक्सीजन देना ही है तो सिलेंडर को हरे रंग से रंगवा कर दो, उसमें चांद-तारे छपवा दो, और हो सके तो जिसे दो उसके साथ एक सेल्फ़ी भी ले लो। ऑक्सीजन पहुंचा कर चुपके से ग़ायब कहां हो जाते हो यार? मतलब थोड़ा तो मौक़ा दो, वरना तुम्हारी इन हरकतों से तो आईटी सेल बर्बाद ही हो जाएगा। हमारी बेरोज़गारी हद से ज़्यादा बढ़ जाएगी।

वो क्या है न, कि सिक्खों को तो हम लोग हिन्दू ही मान लेते हैं। वे लोग बेचारे एतराज़ भी नहीं करते। सिक्ख भाई तो माताराती के दरबार में भी जयकारे लगा आते हैं और बजरंग बली के मंदिर में भी, तो उनकी मदद को हम लोग एडजस्ट कर लेते हैं।

और सबसे बड़ी बात, कि सिक्ख दंगे के अब काफ़ी दिन हो गए, तो हमें ऐसा लगता है कि वे हमारी कमीनगी भूल चुके होंगे। इसलिए थोड़ा कतराकर, थोड़ा निगाह बचाकर हम उनकी मदद को पचा लेते हैं। हालांकि मौक़ा मिलने पर चूकते तो हम अभी भी नहीं हैं! अभी हाल ही में तो किसान आंदोलन के समय हमने उन्हें आतंकवादी बताया था...।

मगर तुम्हारी मदद (मुहब्बत) को हम कहां रक्खें जानां??

अभी पिछले साल ही तो हमने दिल्ली में भयंकर दंगे किए थे! औकात बता दी थी हमने तुम्हें। न तुम्हारे मां-बाप को बख़्शा था और न भाई-बहनों और न बाल-बच्चों को! पिछले 6-7 सालों



में तो हमने तुम्हारी क़ौम के ख़िलाफ़ इतने दंगे किए कि तुम वाक़ई सिहर उठे। जहां दंगों की कोई गुंजाइश नहीं थी वहां भी हमने भीषण दंगे करके दिखा दिए। बिहार के औरंगाबाद में तो ऐसे किए कि मुज़फ़्फ़रनगर भी उसके आगे छोटा पड़ गया। मॉब लिंचिंग तो उसके आगे बड़ी अदना-सी शरारत है! क्या जुनैद और क्या अख़्लाक़... नज़ीब तो आज तक लापता ही है न?

हमारा मसीहा तो कपिल मिश्रा और अनुराग ठाकुर है! क्या उसने ऑक्सीजन सिलेंडर की कोई व्यवस्था नहीं की, जो तुम लेकर दौड़ पड़े?

हमने तुम्हारे परिवार वालों को मौत के घाट उतारे, उनके लिए पूरी शिद्दत से बद्दुआएं कीं, फिर तुम हमारे परिवार वालों को बचाने में क्यों लगे हो यार?? ये सिक्खों जैसी हरकत करने पर क्यों तुले हो??

तुम्हारी यही हरकत रही तो हम तुम से नफ़रत कैसे कर सकेंगे???

कुछ समझा करिए जनाब, आपके ख़िलाफ़ नफ़रत ही तो हमारा ऑक्सीजन है। और उस ऑक्सीजन की हमें फ़िलहाल कोई कमी नहीं होने वाली।



लघुकथाएं



सुरेश सौरभ
विजय न्यूज़ डॉट इन

कोरोना का रोना



देश में कोरोना वायरस को लेकर काफ़ी हलचल और दहशत थी। स्कूल, कॉलेज व देश में कोरोना वायरस को लेकर काफ़ी हलचल और दहशत थी। स्कूल, कॉलेज व तमाम संस्थाओं को सरकार ने बंद करा दिया था। अब भीड़-भाड़ वाली जगहों से पुलिस वाले खोमचे वाले, रेहड़ी वाले व तमाम पटरी दुकानदारों को हटा रहे थे।

अभी दीनू बाज़ार में अपनी रेहड़ी लेकर आया ही था कि पुलिस वालों ने डंडा फटकाते उससे कहा–जल्दी भाग वरना तेरी ख़ैर नहीं।"

सभी दुकानदारों को सामान समेटते देख वह भी बुझे मन से चल पड़ा। धीरे-धीरे भारी क़दमों से घर पहुंचा। उसे देख उसकी पत्नी ने हैरत से कहा–क्या हुआ बड़ी जल्दी वापस आ गए।

पति उदासी से बोला–कोरोना की वजह से सरकार ने भीड़-भाड़ वाले इलाक़ों से दुकानें बंद करा दी, रेहड़ियों और खोमचे वालों को भी हटा दिया।

"शाम को हम और हमारे बच्चे क्या खाएंगे?"

"हमें तो रोज़ कुआं खोदना और पानी पीना है। अल्लाह जाने अब क्या होगा, हम ग़रीबों का। लंबी उबांसी लेते हुए पति बोला।

भूखों मरने से तो अच्छा है कोरोना से मर जाते।" सजल नेत्रों से पत्नी बोली।

बेबसी...

रेहान ख़ान

सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाली दसवीं की छात्रा सुमन का रुदन एवं हिचकियां रुकने का नाम नहीं ले रही थी। लगातार रोते हुए, अपनी डबडबाई आंखों से वो मां को देखे जा रही थी।

"मां! देखो ना, 4 बज गए, बस प्रिंसिपल-मैडम का फ़ोन आने ही वाला है, वो अभी पूछेंगी कि मैंने अपना होमवर्क अपलोड क्यों नहीं किया? देखना, वो कहेंगी कि सुमन तुम्हारा पढ़ाई के प्रति समर्पण कम हो रहा है। आज निरंतर दूसरा दिन है जब तुम अपना होमवर्क अपलोड नहीं कर पाई हो।

मेरी क्या ग़लती है मां? मैंने तो कल भी और आज भी समय पर अपना काम पूरा कर लिया था!"

क्या जवाब दे सकती थी सुमन की मां? सुमन के पिता की वेल्डिंग की दुकान थी। कोरोना-लॉकडाउन के चलते पिछले एक महीने से दुकान बंद थी। रुपए-पैसे की जितनी बचत घर में थी वह भी समाप्त हो चुकी थी, मोबाइल-इंटरनेट रिचार्ज के लिए भी अब पैसे नहीं बचे थे। उधार मांगने के लिए बाहर जा नहीं सकते थे। पैसे हो तो मोबाइल रिचार्ज कराएं? और मोबाइल रिचार्ज हो तो सुमन अपना किया हुआ होमवर्क अपलोड करे।

इतने में ही मोबाइल घनघना उठा। प्रिंसिपल मैडम का ही फ़ोन था। सुमन और सुमन की मां दोनों मोबाइल को देखे जा रहे थे। करते भी तो क्या? बेबस थे दोनों। फ़ोन घनघनाता रहा, सरकारी स्कूल की प्रिंसिपल मैडम भी बेबस थीं उन्हें भी तो ऑनलाइन पढ़ाई की रिपोर्ट ऊपर भेजनी थी।

क़र्ज़

रोहित कुमार

वे वृद्ध थे। अस्सी से ऊपर की आयु रही होगी। कोरोना के कारण अस्पताल में भर्ती थे। पूरे देश के अस्पतालों में बैड, ऑक्सीजन और वेंटीलेटर की क़िल्लत थी, लेकिन उन्हें संयोग से सब उपलब्ध था।

"ये इतनी ज़ोर-ज़ोर से कौन विलाप कर रहा है?" उनकी नज़र एक युवती पर पड़ी। जो लगातार रो-रोकर अपने पति को दाख़िल करने की गुहार लगा रही थी।

''मैडम, आप समझ नहीं रही हैं। हमारे पास कोई बेड ख़ाली नहीं है। आप इन्हें कहीं और ले जाइए। आ'म सारी।''

''सर, हम तीन जगह जा चुके हैं। इनकी हालत बहुत ख़राब है। मैं आपके पांव पड़ती हूं, कुछ कीजिए।'' युवती ने भर्राई आवाज़ में गिड़गिड़ाई।

''डॉक्टर साहब, सुनिए।'' डॉक्टर और युवती दोनों ने उस वृद्ध की ओर देखा।

''इनके पति को मेरा बेड दे दीजिए।'' ''आप क्या कह रहे हैं?''

''जी, मैं सही कह रहा हूं। मैं अपने जीवन के पचासी वर्ष पार कर चुका हूं। मेरे जीने-मरने से अब किसी को कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ने वाला, लेकिन इनकी तो ज़िन्दगी पड़ी है। प्लीज, मेरी मानिए।''

''आपको दुबारा 'बेड' मिलना मुश्किल होगा। सोच लीजिए!''

''मैंने सोचकर ही कहा है, आप उन्हें मेरा 'बेड' दे दें।''

युवक को उनका 'बेड' दे दिया गया। युवक बच भी गया। उसे जब पूरी कहानी पता चली तो सोचा, उस महात्मा के दर्शन तो करें। पूछताछ की तो पता चला, घर लौटने के दो-तीन दिन बाद उनका निधन हो गया।

टीवी समाचार चल रहे थे। देश का बुरा हाल था। लाशों के अंबार लगे थे। लाशों को कंधा देने को अपने सगे-संबंधी भी नहीं आ रहे थे और उस अपरिचित ने अपनी जान के बदले उसकी जान बचाई। राहुल फफक-फफक कर रो पड़ा, ''मेरे सिर पर उनका क़र्ज़ है।''

आख़िरी पन्ना



मौलाना फ़ारूक़ ख़ां

क़ुरआन की विशिष्टता...

क़ुरआन ने अपने विषय में एक जगह कहा है–

''ये सूझ-बूझ की रोशनियां हैं तुम्हारे रब की ओर से और मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो विश्वास करे।'' (क़ुरआन, 7:203)

क़ुरआन की ये आयत बताती है कि क़ुरआन किसी मनुष्य का गढ़ा हुआ कलाम (वाणी) नहीं है, बल्कि यह समस्त मनुष्यों के प्रभु पालनकर्ता की ओर से अवतरित हुआ है। जब क़ुरआन ईशवाणी है, तो उसकी जिन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है, तो उसकी जिन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है उन पर भरोसा किया जा सकता है। ईश्वरीय ग्रंथ में किसी प्रकार की त्रुटि संभव नहीं है। यह किताब जिस उद्देश्य के अंतर्गत अवतरित हुई है, उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इस किताब से अच्छी कोई किताब नहीं हो सकती है।

उपरोक्त आयत में कहा गया है कि यह रब की ओर से है इसमें इस बात की ओर संकेत पाया जाता है कि इस किताब के अवतरण में ईश्वर की 'रूबूबियत' (पालने एवं विकसित करने का गुण) कारफ़रमा है। अर्थात् ईश्वर मनुष्य का ऐसा प्रभु नहीं है कि उसका मनुष्य की उन्नति और उसके आत्मिक विकास की ओर कोई ध्यान न हो, वह मनुष्य के केवल भौतिक आवश्यकताओं को जानता और उन्हें पूरी करता हो, उसने अनाज, तरकारी आदि खाद्य पदार्थ तो जुटाए हों किंतु मनुष्य के आध्यात्मिक विकास और उन्नति के लिए कुछ न किया हो यह क़ुरआन इसी उद्देश्य के अंतर्गत अवतरित हुआ है कि मनुष्य के चारित्रिक और आध्यात्मिक विषय में उसका मार्गदर्शन किया जाए ताकि मनुष्य का आत्मिक विकास संभव हो और वह नैतिकता के शिखर को पा सके। इस संबंध में क़ुरआन ने अपनी तीन विशेषताओं का उल्लेख किया है–

वह बसीरत की रोशनियां हैं अर्थात् मनुष्य को सफल होने के लिए और हर प्रकार की पथभ्रष्टता से बचने के लिए जिस ज्ञान की आवश्यकता है क़ुरआन के द्वारा उसे वह ज्ञान प्राप्त हो सकता है। फिर यह नहीं कहा कि वह प्रकाश है बल्कि कहा कि प्रकाशों का पुंज है। क़ुरआन से मनुष्य जान सकता है कि उसके विचार क्या होने चाहिए और क्या नहीं। वह मनुष्य को सूक्ष्म दृष्टि भी प्रदान करता है ताकि वह अपने प्रत्येक विचार और ख़याल के महत्व और उसके मूल्य को समझ सके। इस प्रकार उसकी आत्मा और चित्त दोनों ही शांति और परिलाप प्राप्त कर सकें।

क़ुरआन बताता है कि मनुष्य एक उत्तरदायी प्राणी है उसे धरती में वे कार्य करने हैं जो ईश्वर को प्रिय हैं, और फिर उसे ईश्वर के पास वापस जाना है, जहां उसे सफल-असफल होने की घोषणा कर दी जाएगी। सफल होने की स्थिति में वह अमरत्व को प्राप्त होगा और उसके लिए हर सुख और सुविधा उपलब्ध होगी। जब ईश्वर किसी से ख़ुश होगा तो अनिवार्यतः उसकी सभी कामनाएं पूरी होंगी।

क़ुरआन ने अपनी दूसरी विशेषता जो बताई है वह हमारे लिए मार्गदर्शन है अर्थात् वह हमें बताता है कि व्यावहारिक रूप से हम किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करें और व्यक्तिगत जीवन में हमारी ज़िन्दगी का रुख़ क्या हो–सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में हम किसी प्रणाली का पालन करें और उन समस्याओं को कैसे हल करें जो जीवन में हमें पेश आ सकती हैं।

हमारी आचारसंहिता क्या हो, नैतिकता हमारी कैसी हो और राजनीति में हमारी क्या नीति हो और किस प्रकार हम हर विषय में अपने को संकुचित दृष्टिकोण से दूर रखें, सार्वभौमिकता और सर्ववीमुखी दृष्टिकोण की रक्षा हम किस प्रकार करें? इन सब बातों के संबंध में क़ुरआन हमारा मार्गदर्शन करता है।

क़ुरआन की तीसरी विशेषता जो उसने उल्लेख किया है वह यह है कि वह सर्वथा रहमत (दयालुता) है। इसका अभिप्राय यह है कि परिणाम की दृष्टि से क़ुरआन रहमत लेकर उतरा है, यदि हम क़ुरआन के दिखाए हुए मार्ग पर चलते हैं जिस ज्ञान से वह हमें सुशोभित करता है उससे पूर्णतः हम लाभांवित होते हैं और जिस जीवन प्रणाली की वह हमें शिक्षा देता है, यदि यथासंभव उसका पालन करते हैं तो हम कभी भी घाटे में नहीं पड़ सकते। सांसारिक जीवन में भी इसका परिणाम कल्याणकारी और शुभ होगा। हर प्रकार की ख़राबियों और बिगाड़ से हम बच सकते हैं।

हमारा लौकिक जीवन सुखकर होगा और हमारा पारलौकिक जीवन भी कामयाब होगा और हम उस उच्च स्थान को पा लेंगे, जिसकी कामना प्रत्येक हृदय में रखी गई हैं।